RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 14	अंक : 1	मुम्बई, अप्रैल 2024	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 14	ISSUE : 1	MUMBAI, APRIL 2024	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2550

श्री १००८ आदिनाथ भगवान, ज्ञानतीर्थ, मुरैना, मध्यप्रदेश

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 14 अंक 1 अप्रैल 2024

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी,
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210**1**0110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2550

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नव निर्वाचित पदाधिकारी	7
भगवान महावीर के सिद्धांत बदल देंगे ज़िंदगी	8
निर्यापक मुनि समयसागरजी बनेंगे आचार्यश्री	10
वैज्ञानिक महावीर	11
सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज	14
तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रबंधकारिणी समिति की प्रथम बैठक	15
तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों की प्रथम बैठक संपन्न	19
उत्तरांचल उत्तराखंड के आंचलिक अधिवेशन	19
परम पूज्य निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी का दीक्षा दिवस	23
गन्धर्वपुरी में पांच प्राचीन अम्बिका प्रतिमाएँ	24
पूर्ण स्वाधीनता के पुरोधा तीर्थंकर ऋषभदेव	26

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

समाज एवं तीर्थ विकास का संबंध : अन्योन्याश्रित

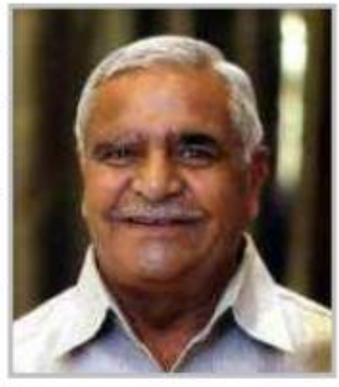

मेरे द्वारा 10 मार्च 2024 को प्रकाशित पुस्तिका **'मेरा स्वप्न तीर्थक्षेत्रों का विकास'** पर समाज बन्धुओं द्वारा उत्साहजनक प्रतिक्रियायें मिली हैं एतदर्थ सभी के प्रति आभार। मैंने लम्बे अन्तराल में विकसित अपने चिन्तन एवं मित्रों से प्राप्त सुझावों को ही इस पुस्तिका में सम्पादित रूप में लिपिबद्ध किया है आप सबने उस पुस्तिका को जरूर पढ़ा होगा किन्तु यदि व्यस्तता के कारण अब तक न पढ़ा हो तो जरूर समय निकाल कर पढ़ने का कष्ट करें। यदि आपको न मिली हो तो मेरे कार्यालय को पत्र लिखकर मंगा लेवें।

गत 30 मार्च को परम पावन अतिशय क्षेत्र अहिच्छत्र पार्श्वनाथ-रामनगर (बरेली), उ.प्र. में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति का विस्तार कर गठन पूर्ण किया गया। इसकी पूरी सूची इसी अंक में प्रकाशित है। मैं एक बार पुनः अपने सभी सहभागियों का स्वागत करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि वे अपना सहयोग इस कमेटी को प्रदान करेंगे जिससे हम अपने तीर्थों के संरक्षण एवं विकास के दायित्व को सक्षमता एवं श्रेष्ठता से सम्पादित कर सकें।

समाज एवं तीर्थ संरक्षण/विकास का अन्योन्याश्रित संबंध है। यदि समाज सक्रिय, संगठित एवं संस्कारवान होगी, श्रद्धालु होगी तो हमारे तीर्थ भी सुरक्षित, जीवन्त एवं समृद्ध बनेंगे। यदि समाज ही उदासीन, विघटित एवं अश्रद्धालु होगी तो फिर तीर्थ कैसे विकसित होंगे। तीर्थ तो पूजने वालों का होता है। हमारी समाज, हमारे पूर्वज सदियों से श्रद्धा, भक्ति पूर्वक तीर्थों की पूजा, अर्चना, वन्दना करते रहे हैं इसी कारण वे जीवन्त हैं। वस्तुतः हमारी पहचान हमारे तीर्थों से है। तीर्थों पर विराजित जिनबिम्ब, वहाँ का पुरातत्त्व, संरक्षित इतिहास हमारी पहचान है। ये अनेकशः हमारे जीवन में जीवनी शक्ति का संचार करते हैं। हमारे बहुत से बन्धु सम्मेदशिखर जी, अयोध्या जी, श्री महावीर जी, श्रवणबेलगोल जी की यात्रा का स्वप्न संजोते हैं एवं उनकी पूर्णता पर स्वयं को कृतकृत्य अनुभव करते है। इसी कारण मेरी मान्यता है कि समाज का भी सम्यक् विकास तीर्थों के संरक्षण हेतु जरूरी है। मैंने स्वयं पहल करके समाज की सभी राष्ट्रीय संस्थाओं को साथ लेकर चलने की पहल की है जिससे तीर्थों के संरक्षण एवं विकास के अपने प्राथमिक दायित्व की पूर्ति की जा सके। बिना समाज के सहयोग से केवल नीतियों के निर्धारण एवं चन्द व्यक्तियों के समूह के प्रयासों से तीर्थक्षेत्रों का विकास आकाश कुसुम कल्पना है। मुझे प्रसन्नता है कि विगत 1 वर्ष में लगभग 2-2.5हजार व्यक्ति तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़े हैं।

इससे तीर्थक्षेत्र कमेटी का आधार मजबूत हुआ है। मैं पुनः आग्रह करता हूँ कि प्रत्येक दि. जैन परिवार से न्यूनतम एक व्यक्ति तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनें इससे हमारा सामाजिक एवं आर्थिक दोनों आधार मजबूत होंगे। मैं यह भी आग्रह करता हूँ कि प्रत्येक दि. जैन परिवार वर्ष में एक बार तीर्थ यात्रा पर जरूर जाये। आप सुविधानुसार समीप या दूर के तीर्थ का चयन कर सकते हैं पर जाये जरूर। आप उसकी व्यवस्थाओं में न्यूनाधिक सहभागी भी बनें। राशि का नहीं भावना का महत्त्व ज्यादा है।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी की समाधि के उपरान्त उनके वरिष्ठतम शिष्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागर जी महाराज को आगामी 16 अप्रैल को श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह) में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जा रहा है। मैं तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से उनके चरणों में नमोस्तु निवेदित कर समस्त संघ को नमन करता हूँ। मैं उस तीर्थ की भी वन्दना करता हूँ जहाँ आज इतने दिगम्बर संतों का सम्मेलन हो रहा है। यह दृश्य अनुपम/अद्भुत होगा।

महावीर जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर सभी साधर्मी भाई/बहनों एवं भक्तों को शुभकामनाऐं।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं भगनियों,

सादर जय जिनेन्द्र !

जैसा कि सर्वविदित ही है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के आगामी ५ वर्ष के लिए अध्यक्ष पद पर समाज श्रेष्ठी श्रीमान जम्बूप्रसाद जी सुशोभित हैं आदरणीय अध्यक्ष जी के कुशल नेतृत्व में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रथम प्रबंधकारिणी समिति की बैठक अहिच्छत्र पार्श्वनाथ क्षेत्र (उ.प्र.) की पावन भूमि पर सम्पन्न हुई जिसमें नई पदाधिकारी परिषद (राष्ट्रीय कार्यकारिणी) का गठन किया गया, इस महत्वपूर्ण बैठक में मनोनीत किये गये समस्त पदाधिकारी महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन एवं सभी पदाधिकारिजनों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप सभी अपनी कुशलता, कार्यदक्षता, निपुणता और बुद्धिमता से तीर्थक्षेत्र कमेटी को आगे ले जाने में अपना सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करेगें जिससे हम अपने तीर्थों, मंदिरों, मूर्तियों को सुरक्षित करने एवं उनके समुन्नत विकास करने में सार्थक सिद्ध होंगे।

पिछले कई वर्षों से श्री सम्मेदशिखर, श्री गिरनार जी, श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, शिरपुर, श्री ऋषभदेव केशरिया जी आदि तीर्थक्षेत्रों के मुकदमे माननीय सुप्रीम कोर्ट एवं हाईकोर्टों में सुनवाई के लिए लंबित चले आ रहे हैं जो समय-समय पर कोर्ट की बेंच पर आते हैं चूंकि इन सभी केसों का संचालन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा ही होता आ रहा है और इन केसों के संचालन में वकीलों आदि की फीसों में एक बड़ी राशि के रूप में धन खर्च होता है जिसकी पूर्ती तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा की जाती है।

चूंकि एक बड़ी राशि मुकदमों में खर्च हो जाने के कारण हम अन्य तीर्थों के जीर्णोद्धार विकास आदि कार्य कराने के लिए उतनी राशि खर्च नहीं कर पाते जितनी की वहां होनी चाहिए इसीलिए हमारा प्रयास है कि तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण आदि के लिए **कानूनविधि कार्पस फण्ड** बनाकर राशि जमा कराई जाए जिसकी आय को मुकदमों में खर्च किया जा सके और तीर्थक्षेत्र कमेटी को तीर्थ संरक्षण की दिशा में कार्य करने के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके एवं सभी तीर्थों का समुन्नत विकास किया जा सके।

ग्रीष्मकाल के समाप्त होते ही हमारे परम पूज्य आचार्यों, मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं समस्त त्यागी, व्रती चातुर्मास के लिए अपने-अपने यथायोग्य स्थान पर तप-साधना कर समाज को लाभान्वित करते हैं। प्रत्येक वर्ष हो रहे चातुर्मास स्थानों पर कलश स्थापित किये जाते हैं, मेरा समस्त पूज्य आचार्यों, मुनि-महाराजों, आर्यिका माताओं एवं समाज के श्रेष्ठी महनुभावों से आग्रह है कि इस वर्ष चातुर्मास कलश स्थापना के साथ एक कलश **तीर्थरक्षा कलश की स्थापना** कराकर उसकी राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई कार्यालय को भेजें। आपके द्वारा भेजी गयी राशि तीर्थक्षेत्रों के विकास एवं उनके संरक्षण-संवर्धन के लिए खर्च की जाती है आप सभी अपना सहयोग देकर हमें आत्मसंबल प्रदान करने की कृपा करियेगा।

अत्यंत हर्ष एवं उल्लास है कि आगामी दिनांक १६ अप्रैल २०२४ का दिन इस कालचक्र के इतिहास में सदा-सदा के लिए अंकित होने वाला दिन बनने जा रहा है। वर्तमान के वर्धमान कहे जाने वाले आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की संलेखना समाधि हो जाने से हुए रिक्त आचार्य पद पर आचार्य श्री के प्रथम शिष्य एवं गृहस्थ भ्राता निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी महाराज का आचार्यपद पदारोहण सिद्धभूमि कुण्डलपुर बड़े-बाबा के दरबार में होने जा रहा है इस अनुपम और अद्भुत दृश्य का साक्षी बनने का सौभाग्य हम सभी समस्त देश वासियों को मिलने जा रहा है। कुण्डलपुर कमेटी की ओर से उत्तम से उत्तम व्यवस्था बनाने की तैयारियां जोर शोर से चल रही हैं। यह सिद्ध भूमि पर आज सिद्धों के लघुनंदन ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे भगवान महावीर का समवशरण इस भूमि पर आ गया हो। इस महामहोत्सव का हिस्सा बनकर मैं अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूँ।

दिनांक २१ अप्रैल २०२४ को भगवान महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक महोत्सव भी हम सभी को बड़े ही धूमधाम से मनाना है। मैं आप सभी समाज जनों को इस पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

विकास की प्राथमिक आवश्यकता-योजनाबद्ध सर्वेक्षण

विगत दिनों अहिच्छत्र पार्श्वनाथ-रामनगर (बरेली) में सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कार्यकारिणी का संविधान के अनुसार विस्तार किया गया। नवगठित कार्यकारिणी में क्षेत्रीयता, विचारधारा, अनुभव आदि में सम्यक् संतुलन रखते हुए सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व दिया गया है जिससे यह विश्वास जगा है कि नई कार्यकारिणी के नेतृत्व में तीर्थों का द्रुतगति से विकास एवं संरक्षण होगा। पूर्व की कार्यकारिणियों ने श्री सम्मेदशिखर जी आदि के लम्बित प्रकरणों को कुशलता से संभाला। फलतः आज हमारे पास 250-300 तीर्थ उपलब्ध हैं। वस्तुतः यह सभी तीर्थ हमारी पहचान हैं यदि इन तीर्थों की विरासत हमारे पास नहीं होती तो हमें कोई प्राचीन धर्म के रूप में स्वीकार ही नहीं करता ये। तीर्थ हमारी प्राचीनता को सिद्ध करने वाले सांस्कृतिक केन्द्र भी हैं। लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे पास हमारे तीर्थों के बारे में अद्यतन जानकारियाँ भी उपलब्ध नहीं है। आदरणीय श्री जम्बूप्रसाद जी ने अपने दृष्टिपत्र (Vision Document) में पृ. 27 पर लिखा है कि 'बहुत समय से आक्रमण और द्वेष की विभीषिका को सहकर भी यदि जैन धर्म प्रामाणिकता से अपने अस्तित्व को बनाने की स्थिति में है तो केवल तीर्थों और तीर्थंकर मूर्तियों की वजह से है इन्ही से जैन इतिहास संवरा है प्रत्येक चिन्ह, एक-एक शिलालेख, एक-एक मूर्ति हमारे अस्तित्व का सबसे सबल प्रमाण है। ऐसे तीर्थों और मूर्तियों के सम्बन्ध में जानना प्रत्येक जैन का कर्त्तव्य है। यही हमारा इतिहास है, यही हमारा प्रमाण है। ऐसी कला एवं संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्द्धन करना हमारा दायित्व है। वर्ष 1975 में भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली द्वारा तीर्थक्षेत्रों का परिचय 5 भागों में छापा गया था, गत 50 वर्षों से इस प्रकार का प्रयास पुनः नहीं हो पाया, अब आवश्यकता है कि संशोधित परिवर्द्धित करके उनका पुनः प्रकाशन कराया जायें।'

मैं आदरणीय बाबू जी की इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ क्योंकि इन तीर्थों पर आवागमन के साधन विद्युत एवं संचार की स्थितियाँ, आवास आदि की व्यवस्थायें मंदिरों की अवस्थिति आदि सब कुछ बदल चुका है। आज क्षेत्रों पर 50 वर्ष पूर्व की अपेक्षा बहुत अधिक मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हैं। समाज को वस्तु स्थिति का बोध कराने पर यात्री संख्या बढ़ सकती है। श्री हसमुख जैन गांधी, श्री आर.के. जैन, श्री सुभाष जैन आदि के प्रयासों से अनेक निर्देशिकायें प्रकाशित हुई हैं जो अपनी अपनी अपेक्षाओं से नवीनतम जानकारी देती हैं किन्तु ये निर्देशिकायें भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पूर्व में प्रकाशित भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ के 5 खण्डों का विकल्प नहीं बन सकती। विशेषकर जो इतिहास इसमें दिया गया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इनको संशोधित करने के लिए सभी तीर्थों का व्यापक सर्वेक्षण आवश्यक है। चाहे क्षेत्रों के भूअभिलेखों का संधारण हो, मालिकाना हक की बात हो अथवा वर्तमान में चल रहे न्यायिक विवादों की अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त करनी हो या प्राथमिक जानकारी सबके

लिए योजनाबद्ध व्यापक सर्वेक्षण ही एक मात्र विकल्प है कुछ छापने के लिए एवं शेष रिकार्ड के लिए। विशेषज्ञों के परामर्श से समस्त आवश्यक जानकारियों को संकलित करने के लिए एक प्रारूप का निर्धारण कर यदि क्षेत्रों का एक टीम द्वारा सघन सर्वेक्षण कराया जाये तो तीर्थक्षेत्र कमेटी के पास क्षेत्रों के सन्दर्भ में सभी आधारभूत जानकारियाँ इकट्ठी हो जायेंगी। ये जानकारियाँ विवादों के निराकरण एवं भावी विकास की योजनाओं के निर्माण में भी सहायक होंगी। वर्तमान में राष्ट्रीय कमेटी अनुदानों के वितरण के समय पूरी तरह आंचलिक समितियों की अनुशंशा पर ही आश्रित रहती है।

मैं मानता हूँ कि यह सर्वेक्षण आसान नहीं होगा। यह समयसाध्य एवं श्रमसाध्य दोनों होगा किन्तु आंचलिक समितियों को यह दायित्व दिये जाने पर उनकी सक्रियता बढ़ेगी तथा वे अपनी शक्ति का तीर्थ विकास में उपयोग कर सकेंगे। अभी तक आंचलिक समितियों के पास विशेष दायित्व न होने के कारण भी हम उनकी शक्ति का तीर्थों के विकास में उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। विभिन्न आंचलिक समितियाँ अपने अपने अंचल का खण्ड तैयार करें तो दो वर्षों के अंतराल में सभी खण्ड समान्तर रूप में तैयार हो जायेंगे। सभी तीर्थ भक्तों/प्रबन्धकों/पाठकों को भी इस सर्वेक्षण में सहयोग करना होगा।

फरवरी-मार्च के दो पंचकल्याणकः- विगत 22-26 फरवरी के मध्य शीतलतीर्थ रतलाम में विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के ससंघ पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आचार्य श्री सुन्दरसागर जी महाराज का संघ भी उपस्थित होने के कारण लगभग 50 से अधिक पिच्छीधारी संतों की उपस्थिति से पूरा मंच शोभायमान हो रहा था। आगमनिष्ठ एवं अनुभवी प्रतिष्ठाचार्य पं. वृषभसेन जी मालगाँव (मिरज) एवं उनकी सिद्धहस्त टीम ने सम्पूर्ण प्रतिष्ठा महोत्सव की क्रियायें प्राचीन प्रतिष्ठा पाठों के अनुरूप सम्पन्न कराई। इस प्रकार प्रज्ञापुरुषोत्तम आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज का एक बहुप्रतिक्षित स्वप्न पूरा हुआ। आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी की समर्पित शिष्या एवं क्षेत्र

की अधिष्ठात्री डॉ. सविता जैन का श्रम तथा श्री कमल जी ठोलिया (चेन्नई) का अध्यक्षीय मार्गदर्शन बहुमूल्य रहा। भारत सरकार के डाक विभाग ने भी महोत्सव के महत्त्व एवं आचार्य श्री के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए इस अवसर पर एक प्रथम दिवस आवरण (1st Day Cover) जारी किया जो अग्रांकित है। रतलाम से लगभग 12 किमी. दूर दिल्ली मुम्बई द्रुतगामी राजमार्ग (Delhi Mumbai 8 Lane Expressway) के समीप स्थित इस क्षेत्र की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा इतने भव्य एवं विशाल रूप से सम्पन्न होगी इसकी कल्पना नहीं थी किन्तु श्री नरेन्द्र रारा जी (गुवाहाटी) के संयोजकत्व में गुरुभक्तों की कर्मठता तथा आचार्य द्वय के मंगल आशीष से सबकुछ सहज और सरल हो गया है।

श्री महावीर गाँधी (रतलाम), श्री अशोक गोधा (बड़नगर) आदि परिवारों का योगदान प्रशंसनीय रहा। मुझे भी इसमें सहभागी बनने का अवसर मिला।

दूसरी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सुमतिधाम-गाँधी नगर, इन्दौर में 6-11 मार्च के मध्य आचार्य श्री विशुद्धसागरजी के ही संघ सान्निध्य में सम्पन्न हुई। इस पंचल्याणक प्रतिष्ठा को देखने जो भी गया उसने एक ही बात कही **न भूतो न भविष्यति**। भव्य, सुरम्य विशाल परिसर, कलात्मक निर्माण, अलौकिक मूर्ति, भव्यतम सुविधाजनक संत सदन तो था ही जिसको देखकर लोग मंत्रमुग्ध थे किन्तु उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह बात थी कि आम जैन महोत्सवों के विपरीत सब कुछ अत्यंत आधुनिक तकनीक से युक्त प्रबन्धन के उच्चतम मानदण्डों के अनुरूप था। आने वाले प्रत्येक भक्त का आधार कार्ड के आधार पर डिजिटल माध्यम से पंजीयन, प्रत्येक भक्त को पहचान पत्र देना उसके लिए भोजन जलपान आदि सभी व्यवस्थायें निःशुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण। लेजर टेक्नालॉजी एवं ड्रोन आदि का प्रयोग करते हुए ऐसी प्रस्तुतियाँ दी गई जो पूर्व में भी किसी जैन आयोजनों में देखने को नहीं मिली। सम्पूर्ण आयोजन में न कोई बोली न कोई चंदा और न कोई परोक्षदान एक श्रावक ने स्वयं द्वारा उपार्जित द्रव्य का श्रेष्ठतम उपयोग प्रशस्त भावना से कर एक मिसाल रच दी है और प्रतिफल में हमें एक नवोदित तीर्थ मिला है जिसका नाम है सुमतिधाम। इन्दौर आने वाले श्रद्धालु अब नवग्रह जिनालय से अपनी वन्दना प्रारम्भ कर सुमतिधाम, ढाई द्वीप होकर ही गोम्मटगिरि पहुँचेंगे, ऐसा जन-जन का कथन है। मैं अपनी ओर से सभी तीर्थ भक्तों की ओर से श्री मनीष जी गोधा को बधाई देता हूँ।

सुमतिधाम का एक दृश्य

निर्यापक श्रमण श्री समयसागर जी महाराज का आचार्य पदारोहण:- संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने गुरु महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज से दीक्षा लेकर एक इतिहास रचा। आपने 131 मुनि एवं 172 आर्यिकाओं को दीक्षा देकर दिगम्बरत्व का ऐसा प्रचार किया जो अविस्मरणीय है। ऐलक, क्षुल्लक दीक्षा एवं ब्र. भाई-बहनों को दिये गये व्रत अलग है। इतने विशाल अनुशासित संघ का नायक बनना निश्चयेन गौरवपूर्ण है। 16 अप्रैल 2024 को कुण्डलपुर (दमोह) में यह इतिहास बनेगा। मैं इस अवसर पर जैन तीर्थ वन्दना के सभी पाठकों की ओर से आचार्य श्री समयसागर जी को नमोस्तु निवेदित करता हूँ।

भारत सरकार की अनुकरणीय पहल

भारत सरकार अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय ने 14 मार्च को दो महत्वपूर्ण घोषणायें की है। एक-देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर में जैन अध्ययन केन्द्र की स्थापना हेतु 25 करोड़ तथा दूसरी- गुजरात विश्व विद्यालय अहमदाबाद में जैन पाण्डुलिपि विज्ञान केन्द्र के स्थापना हेतु 40 करोड़ की राशि स्वीकृत की है इससे जैन धर्म, दर्शन, साहित्य और संस्कृति की पाण्डुलिपियों के संरक्षण तथा डिजिटलीकरण को बढ़ावा मिलेगा एवं जैन विद्या के क्षेत्र में कार्यरत विद्वानों को भी बहुत लाभ प्राप्त होगा। हम भारत सरकार के इस कदम की सराहना करते हैं तथा यह विश्वास दिलाते हैं कि सामाजिक स्तर पर जो भी सहयोग अपेक्षित होगा इन दोनों विश्वविद्यालयों को प्रदान किया जायेगा। हमारे पाठकगण भी यदि कोई सुझाव इस सन्दर्भ में देना चाहते हैं तो उनका स्वागत है। वे मुझे सुझाव भेज सकते हैं। मैं सम्बन्धित वि.वि. के पास उन्हें पहुंचा दूँगा।

जैन तीर्थ वन्दना को अधिक रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक बनाने की दृष्टि से अगले अंक से हम दो नवीन स्तम्भ प्रारम्भ कर रहे हैं 1. महान दिगम्बर जैनाचार्य 2. हमारे जैन तीर्थ। इन स्तम्भों के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में एक-एक आचार्य एवं एक-एक तीर्थ का परिचय प्रकाशित किया जायेगा। पाठक एवं लेखक अपनी रुचि के आचार्य अथवा तीर्थ का परिचय/विवरण अधिकतम ए/4 आकार के दो कम्पोज्ड पृष्ठों में भिजवा सकते हैं। तीर्थ के साथ चित्र आवश्यक है। समयानुसार उन्हें प्रकाशित किया जायेगा।

वर्तमान शासन नायक विश्ववन्द्य भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के अवसर पर सभी पाठकों को हमारी शुभकामनाएँ।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनंदन

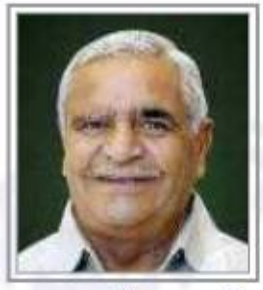

श्री जम्बूप्रसाद जैन, गाजियाबाद
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पीएनसी), आगरा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद जैन कुलाधिपति (TMU) मुरादाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा, उस्मानाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री विजय जैन, अहमदाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर
राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अशोक दोशी, मुंबई
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री वीरेश जैन सेठ, जबलपुर
राष्ट्रीय मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
राष्ट्रीय मंत्री

श्री हंसमुख जैन (गांधी), इंदौर
राष्ट्रीय मंत्री

डॉ. जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर
राष्ट्रीय मंत्री

भगवान महावीर के सिद्धांत बदल देंगे ज़िंदगी

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

जैन परम्परा में 24 तीर्थंकर हुए हैं। वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकरों की श्रृखंला में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। भगवान महावीर के जन्म कल्याणक को देश-विदेश में बड़े ही उत्साह के साथ पूरी आस्था के साथ मनाया जाता है। भगवान महावीर को वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा से 599 पूर्व कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एक मात्र सन्तान के रूप में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। 30 वर्ष तक राजप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ।

महावीर स्वामी ने मानव जीवन के कल्याण के लिए 5 सिद्धांत बताए थे। महावीर स्वामी का मानना था कि इन 5 सिद्धांतों को जिसने समझ लिया वो जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझ जाएगा और उसका बेड़ा हर हाल में पार हो जाएगा। 5 सिद्धांतों पर टिका था स्वामी महावीर का जीवन। भगवान महावीर ने लोगों को समृद्ध जीवन और आंतरिक शांति पाने के लिए 5 सिद्धांत बताए। ये जीवन जीना सिखाते हैं और भीतर तक अनंत शांति, आनंद की अनुभूति देते हैं। भगवान महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पांच महान सिद्धांतों की शिक्षा दी। पाश्चात्य संस्कृति और भागमभाग के इस के दौर में ये पांच सिद्धांत आपके बहुत काम आ सकते हैं। आपके आत्मबल को मजबूत करेंगे, तनाव को दूर करेंगे और दृढ़ संकल्प शक्ति जगायेंगे। शांति का अनुभव होगा।

वे पांच सिद्धांत इसप्रकार हैं -

1. अहिंसा : भगवान महावीर ने अहिंसा की जितनी सूक्ष्म व्याख्या की है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने मानव को मानव के प्रति ही प्रेम और मित्रता से रहने का संदेश नहीं दिया अपितु मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति से लेकर कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी आदि के प्रति भी मित्रता और अहिंसक विचार के साथ रहने का उपदेश दिया है। उनकी इस शिक्षा में पर्यावरण के साथ बने रहने की सीख भी है। महावीर अहिंसा के समर्थक थे। उनका कहना था कि इस लोक में जितने भी एक, दो, तीन, चार और पांच इंद्रियों वाले जीव हैं, उनकी हिंसा न करो, उनके पथ पर उन्हें जाने से न रोको, उनके प्रति अपने मन में दया का भाव रखो और उनकी रक्षा करो।

द्वेष और शत्रुता, लड़ाई-झगड़े और सिद्धांतहीन शोषण के संघर्षरत विश्व में जैनधर्म का अहिंसा का उपदेश न केवल मनुष्य के लिए बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। इसमें करूणा, सहानूभूति, दान, विश्वबंधुत्व और सर्वक्षमा समाविष्ट हैं। अनेकांत और उसका मर्म अहिंसा प्रतिकूल चिंतन और विचार जागृत होने पर सहिष्णु बने रहने का उपदेश देता है। भगवान महावीर के मुख्य सिद्धांतों में अहिंसा उनका मूलमंत्र था यानी 'अहिंसा परमो धर्म' क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र-शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता है।

अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दु:ख न दें। **'आत्मान: प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्** इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें।

भगवान महावीर अहिंसा की अत्यंत सूक्ष्मता में गए हैं। आज तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति सजीव है , पर महावीर ने आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि वनस्पति भी सचेतन है , वह भी मनुष्य की भांति सुख - दुख का अनुभव करती है। उसे भी पीड़ा होती है। महावीर ने कहा , पूर्ण अहिंसा व्रतधारी व्यक्ति अकारण सजीव वनस्पति का भी स्पर्श नहीं करता। महावीर के

अनुसार परम अहिंसक वह होता है , जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है , जो सब जीवों को अपने समान समझता है। ऐसा आचरण करने वाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। उनकी अहिंसा की परिभाषा में सिर्फ जीव हत्या ही हिंसा नहीं है , किसी के प्रति बुरा सोचना भी हिंसा है। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाय तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना ही आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है।

2. सत्य : महावीर स्वामी का कहना था कि सत्य ही सच्चा तत्व है। जो बुद्धिमान व्यक्ति जीवन में सत्य का पालन करता है, वो मृत्यु को तैरकर पार कर जाता है।किसी वस्तु विचार के सभी पक्षों को जानना एवं एक साथ उनको व्यक्त करना असंभव है। अतः हमें अपने विचार एवं पक्ष पर ही आग्रहशील न होकर दूसरे के विचार एवं पक्ष को भी धैर्यपूर्वक सुनना चाहिये। संभव है कि किसी अन्य दृष्टि से दूसरे के विचार भी सत्य हो इससे सद्भाव स्थापित होता है एवं मतभेद कम होते हैं। भारतीय समाज को आज इस सद्भाव की विशेष आवश्यकता है यही अनेकान्तवादी दृष्टिकोण है।

भगवान महावीर का ये सिद्धांत हर स्थिति में सत्य पर कायम रहने की प्रेरणा देता है. किसी को भी इसे अपनाकर सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए. यानी अपने मन और बुद्धि को इस तरह अनुशासित और संयमित करना, ताकि हर स्थिति में सही का चुनाव (satya) कर सकें।

3. अचौर्य (अस्तेय) : अचौर्य सिद्धांत का अर्थ ये होता है कि केवल दूसरों की वस्तुओं को चुराना नहीं है, यानी कि इससे चोरी का अर्थ सिर्फ भौतिक वस्तुओं की चोरी ही नहीं है, बल्कि यहां इसका अर्थ खराब नीयत से भी है। अगर आप दूसरों की सफलताओं से विचलित होते हैं, तो भी ये इसके अंतर्गत आता है।किसी की बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण करना चोरी है ,समानान्तर बही खाते रखना, टैक्स चोरी करना, मिलावट करना, जमाखोरी करना, धोखेबाजी करना, कालाबाजारी करना, सभी चोरी के अन्तर्गत आते हैं। स्वस्थ, शान्तिप्रिय समाज व्यवस्था हेतु अचौर्य जरूरी है।

किसी के द्वारा न दी गई वस्तु को ग्रहण करना चोरी कहलाता है. महावीर का कहना था कि व्यक्ति को कभी चोरी नहीं करनी चाहिए.

4. ब्रह्मचर्य : महावीर स्वामी ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठ तपस्या मानते थे। वे कहते थे कि ब्रह्मचर्य उत्तम तपस्या, नियम, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, संयम और विनय की जड़ है। ब्रह्मचर्य विवाह संस्था भारतीय समाज का वैशिष्ट्य है। इस संस्था के कमजोर पड़ने पर पाश्चात्य समाज में आई विसंगतियाँ एवं छिन्न भिन्न होती समाज व्यवस्था सर्वविदित है। असंयमित, अतिभोगवादी जीवन शैली से जनित महामारी (AIDS) से आज सारा विश्व चिंतित है। महावीर ने साधुओं हेतु पूर्ण ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थों हेतु पाणिग्रहीता पत्नी / पतिके साथ संतोषपूर्वक गृहस्थ धर्म के पालन का उपदेश दिया। जो ब्रह्मचर्य का कड़ाई से पालन करते हैं, वे मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ते हैं।

5. अपरिग्रह : महावीर स्वामी का कहना था कि जो आदमी खुद सजीव या निर्जीव चीजों का संग्रह करता है, दूसरों से ऐसा संग्रह कराता है या दूसरों को ऐसा संग्रह करने की सम्मति देता है, उसको दुःखों से कभी छुटकारा नहीं मिल सकता. यदि जीवन का बेड़ा पार लगाना है तो सजीव या निर्जीव दोनों से आसक्ति नहीं रखनी होगी।

भगवान महावीर ने अपरिग्रह को विशेष महत्व दिया था।अपरिग्रह का अर्थ है- जीवन निर्वाह के लिए केवल अति आवश्यक वस्तुओं को ग्रहण करना। मानव-जाति अपनी निरन्तर बढ़ती जरूरतों के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रही है। प्रकृति के साथ सम्यक व्यवहार की सीख हमें जैन परम्परा से मिलती है।

भगवान महावीर ने तो अहिंसा और अपरिग्रह का संदेश दिया था, लेकिन आजकल आदमी हिंसा पर उतारू है। ज्यादा परिग्रह करने लगा है। हिंसा पर आदमी उतारू ही इसलिए हो रहा है, क्योंकि वह परिग्रह में जी रहा है। जहाँ परिग्रह होता है, वहाँ पाँचों पाप होते है। परिग्रह के लिए आदमी चोरी करता है, झूठ बोलता है, हत्या करता है, व्यसनों का सेवन करता है। सभी पापों की जड़ परिग्रह है। जब तक दुनिया भगवान महावीर के अपरिग्रह को नहीं जानेगी, किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा।

परम अहिंसक वह होता है जो अपरिग्रही बन जाता है। हिंसा का मूल है परिग्रह। परिग्रह के लिए हिंसा होती है। आज पूरे विश्व में परिग्रह ही समस्या की जड़ है। भगवान महावीर ने दुनिया को अपरिग्रह का संदेश दिया , वे स्वयं अकिंचन बने। उन्होंने घर , परिवार राज्य , वैभव सब कुछ छोड़ा , यहां तक कि वे निर्वस्त्र बने। अपरिग्रह न्यायपूर्वक उपार्जित धन से अपने परिवार की सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरान्त शेष राशि का राष्ट्र एवं समाज हित में उपयोग करना, उस धन का स्वयं को स्वामी नहीं अपितु संरक्षक मानना ही अपरिग्रह है।

भगवान महावीर ने 'अहिंसा परमो धर्मः' का शंखनाद कर **'आत्मवत् सर्व भूतेषु'** की भावना को देश और दुनिया में जाग्रत किया। 'जियो और जीने दो' अर्थात् सह-अस्तित्व, अहिंसा एवं अनेकांत का नारा देने वाले महावीर स्वामी के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ है।

भगवान महावीर के विचार किसी एक वर्ग, जाति या सम्प्रदाय के लिए नहीं, बल्कि प्राणीमात्र के लिए हैं। भगवान महावीर की वाणी को गहराई से समझने का प्रयास करें तो इस युग का प्रत्येक प्राणी सुख एवं शांति से जी सकता है।

भगवान महावीर का मार्ग आज के युग की समस्त समस्याओं, मूल्यों की पुन: स्थापना, जीवन में नैतिकता का समावेश, भोगवादिता, संग्रह तथा हिंसा से बचने के लिए सही रास्ता है। महावीर का संदेश आज राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में उपयोगी है। भगवान महावीर आदर्श पुरुष थे। उन्होंने मानवता को एक नई दिशा दी है। उनके बताये हुये अहिंसा, सत्य आदि मार्गों पर चलकर विश्व में शांति हो सकती है।

महावीर के उपदेशों में एक संपूर्ण जीवन दर्शन है। एक जीवन पद्धति है। आज की समाज को इस जीवनपद्धति की कहीं ज्यादा जरूरत है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटें तभी महावीर जयंती मनाना सार्थक होगा।

2550वें निर्वाणोत्सव वर्ष पर भगवान महावीर स्वामी के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुचाएं, स्वयं आगे आएं दूसरों को भी प्रेरित करें।

44 वर्ष से दिगम्बरत्वधारी निर्यापक मुनि समयसागरजी बनेंगे आचार्यश्री
शरद पूर्णिमा को ही जन्में है श्रीमंती के लाल शांतिनाथ

– राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के समाधिस्थ होने के बाद दिगम्बर जैन जगत के सबसे बड़े संघ को नवीन आचार्य के रूप में मुनिश्री समयसागरजी महाराज का मिलना तय है । २७ अक्टूबर १९५८ शरद पूर्णिमा को जन्में श्री शांतिनाथ अष्टगे की जन्मभूमि सदलगा कर्नाटक है ।

८ मार्च १९८० को सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरिजी में युग श्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित प्रथम शिष्य मुनिश्री समयसागरजी महाराज विगत ४४ वर्ष से दिगम्बरत्व की साधना में तल्लीन है । जो भी उन्हें जानता है वह यह जानता है कि संघ में सबसे कम बोलने वाले निरंतर अपने आप में रमण करने वाले, शास्त्र अध्ययन करने वाले मुनिश्री समयसागरजी है, जिनमें आमजनों को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज दिखाई देते है ।

श्रीमंती माता व श्री मल्लप्पा अष्टगें के छह पुत्र–पुत्रियों में सबसे छोटे पुत्र शांतिनाथ देश के सबसे बड़े संघ की बागडोर सम्हालकर दिगम्बरत्व को नेतृत्व प्रदान करेंगे । यह लिखते हुए मुझे अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है कि उस माँ के सौभाग्य की कल्पना ही की जा सकती है जिसने छह बच्चे (चार पुत्र, दो पुत्र) को जन्म दिया । वे सभी दिगम्बर धर्म के ध्वजाधारी बने है । सर्वप्रथम आचार्यश्री विद्यासागरजी (जन्म नाम – विद्याधर), मुनिश्री योगसागरजी (जन्म नाम – अनंतनाथ), मुनिश्री समयसागरजी (जन्म नाम – शांतिनाथ), एक मात्र घर को सम्हालने वाले श्री महावीरप्रसादजी का मन भी घर में कैसे लगता वे भी मुनिश्री उत्कृष्टसागरजी के रुप में दीक्षित हो गए । इतना ही नहीं श्री मल्लप्पाजी व श्रीमंतीजी ने भी मुनिश्री मल्लिसागरजी व आर्यिका समयमति माताजी के रुप में दीक्षा लेकर समाधि को धारण किया ।

निर्यापक श्रमण समयसागरजी महाराज ने लौकिक शिक्षा हाईस्कूल तक मराठी माध्यम में पूर्ण की है, आप २ मई १९७५ से आचार्यश्री के संघ में ब्रह्मचर्य लेकर सम्मिलित हुए । फिर क्षुल्लक, ऐलक बनकर पांच वर्षों तक आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से अध्ययन कर उनके प्रथम शिष्य होने का गौरव प्राप्त किया । उनके चरण पथ अनुगामी मुनिश्री समयसागरजी महाराज भी मीठा नमक, दही, फल, चटाई आदि

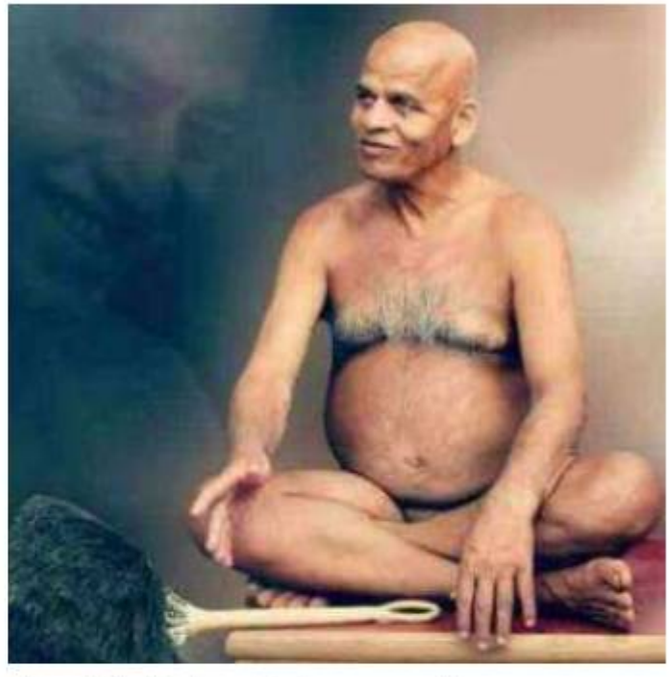

के त्यागी है। निर्णायक मुनिश्री समयसागरजी महाराज ज्ञान–ध्यान में लीन मुनि है, उनमें आध्यात्म के प्रति जबरदस्त जागरुकता है हमेशा अंतरंग में रहकर धर्मसाधना करना उनका लक्ष्य रहा है । जिस गौरव पूर्ण परिवार के वे सदस्य है, उतने ही एक ऐसे राष्ट्रीय गौरव और जन–मन के हृदय में बसने वाले संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी के शिष्य होने का गौरव भी उन्हें मिला है । २०१८ में उन्हें प्रथम निर्णापक श्रमण घोषित किया गया था ।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के द्वारा १३१ मुनिदीक्षा, १७२ आर्यिका दीक्षा, २२ ऐलक दीक्षा, ९० क्षुल्लक, क्षुल्लिका दीक्षा के साथ लगभग चार सौ से अधिक दीक्षाएं दी गई व अनेक भैया–दीदी जो ब्रह्मचर्य अवस्था में है व हजारों प्रतिमाधारी है । आचार्य श्री का अनुशासन इस युग में सर्वश्रेष्ठ अनुशासन कहा जाता है । उनके एक इशारे पर उनके शिष्य वहीं थम जाते है । आंधी–तुफान, वर्षा–ओले सारी परिस्थितियों में उनका निर्णय ही सर्वमान्य होता रहा है ।

आचार्यश्री के रुप में पूज्य समयसागरजी महाराज १६ अप्रैल २०२४, मंगलवार को दिगम्बर जैन तीर्थ कुण्डलपुर जिला दमोह म.प्र. में सर्व संघ की उपस्थिति में पद ग्रहण करेंगे जो एक अद्भुत दृश्य होगा । संपूर्ण संघ उनके एक इशारे पर

कुण्डलपुर पहुंच रहा है यह आचार्यश्री के संघ की अभूतपूर्व विशेषता है। जैन शासन में आचार्य पद की महत्ता २८ मूलगुणों के साथ ३६ मूलगुणों पर आधारित है। ३६ मूलगुणों के साथ आचार्य पद नेतृत्व का प्रतीक है। जिसमें धीर–वीर–गंभीर व्यक्तित्व के रुप में अनेक आचार्यों को देखा है जिन्होंने दिगम्बरत्व को देखा है जिन्होंने दिगम्बरत्व के गौरव को स्थापित करते हुए समाज का मार्गदर्शन किया है।

वर्ष २०२४ बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष है, यह वर्ष अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी का २५५०वां निर्वाण वर्ष है। चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज का आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष भी है। जैन समाज ने इस वर्ष बहुत खोया है फिर भी कालचक्र की गति तो गतिमान है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के उत्तराधिकारी के रुप में उन्हीं के प्रथम शिष्य पूज्य समयसागरजी महाराज के प्रति हम सभी बहुमान व्यक्त करते हुए कामना करते है कि दिगम्बरत्व की ध्वजा को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने जितना वृद्धिंगत किया है, उसी अनुरूप निर्यापक श्रमण, समयसागरजी महाराज एक श्रेष्ठ आचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित होकर जैन संस्कृति के उन्नायक आचार्य होकर अनेकों जीवों के कल्याण का निमित्त बनकर जैन जयतु शासनम् को गौरवान्वित करेंगे ।

वैज्ञानिक महावीर

महावीर दीपचंद ठोले, छत्रपती संभाजीनगर

इतिहास गवाह है जब-जब पृथ्वी पर अत्याचार, अनाचार, दुराचार, हिंसा, का बोलबाला हुआ तब तब दिव्य आत्माओ ने इस धरातल पर अवतार लेकर समाज में आमूल चूल बदलाव लाया। इसी श्रेणी मे एक पवित्र आत्मा का जन्म हुआ। जो बचपन से ही शौर्य और पराक्रम का धनी था । इसलिए उनका नाम वीर, अतिवीर और महावीर पड़ा। वह साधारण प्रतिभा का धनी था इसलिए उन्हें सन्मति कहा गया। उनके गुण निरंतर वृद्धिगत होते थे इसलिए वर्धमान कहा गया।

भगवान महावीर मौलिक थे, वे शास्त्रीय नहीं वैज्ञानिक थे। उन्होने सम्पुर्ण जीवन को प्रयोगशाला बनाकर आत्मिक और बौद्धिक चिंतन द्वारा निरपेक्ष सत्य का अनुभव कर संसार के जड़ और चेतन स्वरूप का अध्ययन किया और अंतरिक्ष विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, परमाणु विज्ञान, कर्म विज्ञान आदि के मूल सिद्धांतों की घोषणा की और जनमानस के कल्याणार्थ वितरित किया ।जिसे हम पंचशील सिद्धांत कहते हैं। जो अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह आचोर्य और ब्रह्मचर्य है। यही हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं। क्योंकि वे व्यवहारिक जीवन की कसौटी पर कसे हुए शाश्वत सत्य है। उनमें वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिकता का अपूर्व सम्मिश्रण है। जिस पर चलकर कोई भी आत्मशुद्धि तथा आत्मोन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो सकता है। हम यह कह सकते हैं कि दुनिया के सबसे बड़े वैज्ञानिक महावीर थे। क्योंकि गत दो सौ वर्ष से जिस गति से विज्ञान प्रगति कर रहा है उन सब में भ. महावीर द्वारा २६०० वर्ष पूर्व कहे गए तत्वों का हम अनुभव कर रहे हैं। आज जो हमें विज्ञान दिखा रहा है वह हजारों वर्ष पूर्व से ही हमारे शास्त्रों में वर्णित है । उन्ही का रिसर्च कर वैज्ञानिक उनकी पुष्टि कर रहे है। द्रव्य दृष्टि से असत् का जन्म नही होता सत् का विनाश नही होता। यह सिद्धान्त त्रैकालीक है। आज हम आगम के सुत्रो को वैज्ञानिको के नाम से पहचानते है । जैसे न्यूटनका गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत उसके जन्म के पुर्व से ही था। उसने सिद्धांत बनाया नही, मात्र बताया। सिद्धांत त्रैकालिक होते है, तात्कालिक नही। वैज्ञानिक अन्वेषक हो सकते है,लेकिन कर्ता नही। जगत मे कुछ भी नया नही है। केवल वस्तु का परिणमन है। विज्ञान में सर्च नहीं रिसर्च होता है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने सन् १९०५ में महावीर के ही सिद्धांतों पर रिसर्च कर सापेक्षता के सिद्धांत की पुष्टि की। भ. महावीर का अनेकांतवाद सापेक्षतावाद और बहुलवाद को प्रोत्साहित करता है। भ. महावीर का अनेकान्तवाद सर्वोदयी तीर्थ है। अनेकांत जैन दर्शन का प्राण है, हृदय है। अपनी ही बात का आग्रह नहीं रखना, अनाग्रही भावना रखना यही अनेकांत वैचारिक सहिष्णुता है। इसके बिना सहअस्तित्व की भावना टिक नहीं सकती। ऐसे महान सिद्धांत को पहले ही हमने समझ लिया होता तो आज धर्म के इतने बंटवारे नहीं होते । जब तक सापेक्षता साथ में लेकर नहीं चलेंगे जीवन में सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते । भ. महावीर धर्म जगत के आइंस्टीन है और आइंस्टीन विज्ञान जगत के महावीर है।

भगवान् महावीर ... एक कालजयी व्यक्तित्व

सुबोध मलैया, सागर

महावीर अवतार पुरुष नहीं थे और न ही वे भगवान् ! भगवान् तो वे अपने पुरुषार्थ के बाद बने जैन दर्शन में भगवान् बनते हैं....अवतरित नहीं होते। वे हमारे समान ही इस भारत वसुन्धरा पर विचरते थे धर्म चक्र का प्रवर्तन करने से वे तीर्थंकर कहलाऐं, वे मानव नहीं महा मानव बने।

श्रमण परम्परा में तीर्थंकर महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर हैं। भगवान् महावीर ने जन–मानस में अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना कर प्राणी मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रजातांत्रिक दृष्टि के पोषक भगवान् महावीर ने लोक को समुन्नत करने के लिए लोक भाषा प्राकृत का प्रयोग अपने उपदेशों के निमित्त किया। भाषा, संस्कृति का आधार होती है। महावीर की सूक्ष्म दृष्टि भाषा के महत्व को उजागर कर विश्व इतिहास की धरा में एक अपूर्व चिन्तन किया है इस तरह भगवान् महावीर सर्वोदय के प्रणेता हैं।

भगवान् महावीर ने विश्व को वीतरागता का संदेश दिया और बताया कि राग–द्वेष मोह का त्याग होने पर ही दु:खों का अभाव होगा एवं सच्चा सुख प्राप्त होगा। सभी जीव वीतरागता के मार्ग पर चलें तो सुखी होकर स्वयं परमात्मा बन सकते हैं।

जैन धर्म में प्राचीन वाङमय इतना महत्वपूर्ण है कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। धर्म दर्शन, पुरातत्व, आचार संहिता स्थापत्य–कला आदि के कारण विश्व के धर्मों में जैन धर्म का अपना महत्व है।

अपने में भगवान् देखना और हर आत्मा को अपने समान देखना यही है, भगवान् महावीर का आत्मा से परमात्मा बनने का धर्म। जो स्व–निहित शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है वही महावीर है, अतिवीर है, वर्धमान है, भगवान् है। प्रत्येक भव्य आत्मा में यह योग्यता होते हुए भी उसकी अभिव्यक्ति, सत्य–विश्वास, सत्य विज्ञान तथा सदाचार की एकात्मक साधना, अभिन्न साधना, अभिन्न रत्नत्रय, निश्चय रत्नत्रय होती है।

भगवान् महावीर इस युग के अंतिम तीर्थ प्रवर्तक हैं। भारत की वसुन्धरा पर अनेक महापुरुष हुए, भगवान् ऋषभदेव से महावीर पर्यन्त तीर्थंकर धर्म तीर्थ के प्रवर्तक रहे हैं। भगवान् महावीर स्वामी ने तपोमय जीवन से विश्व में अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त वाद सिद्धांत द्वारा विश्व शांति का पावन संदेश दिया, जो आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है।

भगवान् महावीर का जीवन और उनके उपदेश, सादा जीवन, अहिंसा और सद्भाव के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

आवश्यकता है अहंकार को त्यागकर अनेकान्त, स्याद्वाद के सिद्धांत की उपयोगिता स्वीकार कर; अहिंसा एवं सह–अस्तिव की उपादेयता समझ, जीने और जीने दो का मंत्र आत्मसात करें। कर्म, संसार में किसी को नहीं छोड़ते चाहे वह इंसान, मुनि या तीर्थंकर ही हो। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल प्राप्त होगा। कर्म कभी भी चेहरा देखकर नहीं आता। व्यक्ति द्वारा किया गया कर्म व्यक्ति को ही भोगना पड़ता है कोई दूसरा उसे नहीं भोगता।

भक्ति में चमत्कार होता है भगवान् में नहीं, यदि आप भक्ति शुद्ध मन से करते हैं तो निश्चित ही आपका कल्याण होगा।

महावीर का युग विश्व इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो उस युग में महावीर जैसे समाज सुधारक तथा आध्यात्मिक महान संत हुए। महावीर ने मानवता को अपने विचार एवं आचरण से सर्वोच्च स्थान प्रदान करने के संदेश यथार्थता के प्रकाश से आध्यात्मिक पथ को आलोकित किया। भगवान् महावीर विचारों में समन्वयवादी, आचार में क्रान्तिकारी थे महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियों में हिंसात्मक प्रवृत्तियों का जमकर विरोध किया। उन्होंने कर्म काण्डों एवं पशु वध आदि का विरोध कर अनेक क्रान्तिकारी सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। भगवान् महावीर ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह पांच सिद्धांतों की व्याख्या की इसके अतिरिक्त कर्म सिद्धांत का भी विवेचन प्रस्तुत किया।

महावीर का प्रथम सिद्धांत **अहिंसा** है। अहिंसा का यथार्थ रुप से पालन एक वीर ही कर सकता है यह भ्रान्ति पूर्णत: निराधार है कि महावीर की अहिंसा समाज और राष्ट्र को कमजोर बनाती है उनकी अहिंसा का पालन कायर कदापि नहीं कर सकता। शक्ति सम्पन्न भारत ही अपने विरोधियों को मुंह तोड़ जवाब देकर संपूर्ण उप महाद्वीप में शांति कायम कर सकता है।

अहिंसा में राग द्वेष, क्रोध, मोह, लोभ, माया का त्याग निहित है। आज विश्व में पर्यावरण, प्रदूषण एवं परिस्थितिजन्य असंतुलन का जो भयावह रुप बनता जा रहा है उसका निदान भगवान् महावीर के स्थावर जीवों के घात (हिंसा) में भी विवेक रखने की शिक्षा को गंभीरता पूर्वक समझे बिना संभव ही नहीं है।

भगवान् महावीर के सिद्धांत, **सत्य** की अन्य धर्मों में विभिन्न दृष्टिकोण से व्याख्या की गई है। आत्मा के विकास एवं परमात्मा की रीतियां विभिन्न धर्मों में बताई गई हैं। प्राय: सभी अपने पंथ को सत्य एवं अन्य को असत्य मानते हैं। यह साम्प्रदायिक कटुता एवं पारम्परिक कलह का मूल है इसके समाधान हेतु महावीर ने अनेकान्त वाद के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जो पूर्ण सत्य शब्दातीत है। महावीर ने कहा जिसे मैं सत्य मानता हूँ केवल वही सत्य नहीं है, अन्य व्यक्ति जिसे सत्य मानते हैं वह भी सत्य हो सकता है। इस समन्वयकारी दृष्टि से सौहार्द्र, समन्वय एवं विचार सहिष्णुता का मार्ग प्रशक्त होता है मतभेदों के निरसन एवं मैत्री की अभिवृद्धि का इससे बढ़कर उपाय नहीं हो सकता।

महावीर का तीसरा सिद्धांत **अस्तेय** है उनके अनुसार जिस कार्य से समाज को कष्ट हो, राष्ट्र में उच्छृंखलता फैलने एवं अव्यवस्था उत्पन्न

हो वह सब अस्तेय के विपरीत हैं। भगवान् महावीर की मान्यता के अनुसार समाज विरोधी गतिविधियां धर्म विरुद्ध हैं। तात्कालिक परिस्थिति को दृष्टिगत रखकर उन्होंने समाज विरोधी गतिविधियों को धार्मिक दृष्टिकोण से इसीलिए त्याज्य बतलाया जिससे समाज आस्था पूर्वक त्याग करें यदि हम देश की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ और देशवासियों के चरित्र को उत्तम बनाना चाहते हैं तब हमें महावीर के अस्तेय सिद्धांत का अनुसरण करना होगा।

महावीर का चौथा सिद्धांत है **ब्रह्मचर्य**। ब्रह्मचर्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत था वह मात्र शारीरिक भोग तक सीमित नहीं था। मन में विकार आना भी ब्रह्मचर्य व्रत को भंग करना था। कामोद्दीपक अश्लील साहित्य का पठन–पाठन एवं अश्लील अशोभनीय वस्त्रों को धारण करना आदि सभी कुछ ब्रह्मचर्य भंग की सीमा के अन्तर्गत् हैं। यही नहीं रसोत्पादक अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण भी ब्रह्मचर्य का हनन है।

भगवान् महावीर का पांचवा सिद्धांत **अपरिग्रह** है। महावीर ने अणु व्रत के माध्यम से जनता में वर्गभेद को मिटाने परिग्रह–परिमाण व्रत अथवा अपरिग्रह को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

महावीर के समय वर्गभेद का बोलबाला था, शूद्रों को धर्म–कार्य का अधिकार प्राप्त नहीं था। ब्राह्मणों को उनकी छाया मात्र से भी द्वेष था वे समाज के अंग होते हुए भी समाज से कोसों दूर थे। महावीर ने सम्प्रदाय वाद एवं जातिवाद के विरोध में सक्रिय कदम उठाये उन्होंने मानवीय उच्चताओं एवं निम्नताओं और पतित वर्ग के समुदाय को भी धर्माराधना का अधिकार प्रदान किया। धर्माराधना हेतु दीक्षा लेना आवश्यक नहीं है। जीवन में अणु व्रतों को कोई भी किसी भी जाति का व्यक्ति धारण कर हिंसा एवं मांसाहार, अभक्ष्य, का त्याग तो कोई भी कर सकता है।

महावीर ने नारी को स्वाध्याय करने एवं धर्म साधना के समान अधिकार प्रदान किये उन्होंने अपने चतुर्विध–संघ में समान स्थान प्रदान कर नारी समाज में जागृति उत्पन्न की। वैदिक कर्म काण्डों एवं बाह्याडम्बरों के स्थान पर आत्म विकास का उन्होंने अधिक बल दिया। समस्त जीवों को वे समान दृष्टि से देखते थे प्रत्येक जीवधारी कर्मोच्छेदन कर आत्मा से महात्मा और परमात्मा बन सकता है।

भगवान् महावीर के सिद्धांत जन कल्याणकारी हैं और आज की व्याधियों को दूर करने में पूर्णतया सक्षम हैं उनके मार्ग पर चलकर आज का संत्रस्त विश्व शांति प्राप्त कर सकता है। भगवान् महावीर के सिद्धांतों के पालन से विश्व के समस्त राष्ट्र शांति पूर्ण सह अस्तित्व की भावना के साथ सुखी एवं समृद्धशाली बन सकते हैं।

जैन दर्शन में आचार और विचार में एकरूपता होने से उसका आचारात्मक पक्ष उतना ही श्रेष्ठ है जितना कि उसका दार्शनिक पक्ष। दार्शनिक जगत में अनेकान्त और स्याद्वाद सिद्धांत मान्य और बेजोड़ हैं वैसे ही आचार क्षेत्र में अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांत भी अपना अपूर्व स्थान रखते हैं। तीर्थंकरों के विचारों में अहिंसा और अपरिग्रह ही तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित आचार धर्म की नींव है। तीर्थंकरों ने मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ही बतलाया है जो मुनि धर्म के पालन द्वारा प्राप्त होता है।

हमारी प्राचीन संस्कृति और परम्परा कितनी समृद्ध और ज्ञान परक थी। भारतीय दर्शन में आत्मा को ही परमात्मा कहा गया है।

श्रमण संस्कृति के प्रणेता भगवान् महावीर जिनके उपदेश जिनके सिद्धांत आज भी सर्वमान्य हैं जिसे संपूर्ण जैन समाज ने अंगीकार किया वह सर्वोपरि हैं।

आज से लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व का युग धार्मिक उथल–पुथल का युग था। इस युग में न केवल प्राचीन धर्म परम्पराओं में अनेक क्रान्तिकारी पुरुषों का जन्म हुआ किन्तु नये मत–सम्प्रदाओं का भी आविर्भाव हुआ।

ईसा पूर्व की छठी शताब्दी का भारत धार्मिक हलचलों का केन्द्र था। भगवान् महावीर जैसे सत्य के परम दृष्टा और अनाग्रही (अनेकान्त वादी) महापुरुष युग को अनेकान्त का बोध दे रहे थे।

स्मारकों एवं धरोहरों के अध्ययन से किसी भी राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास को समझा जा सकता है। स्मारकों एवं धरोहरों के साथ उस राष्ट्र के अतीत से जुड़ी गौरव गाथाएं होती हैं।

जैन धर्म में मान्य तीर्थंकरों का अस्तित्व वैदिक काल के पूर्व भी विद्यमान था। उपलब्ध पुरातत्व संबंधी तथ्यों के निष्पक्ष विश्लेषण से यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि तीर्थंकरों की परम्परा अनादिकालीन है।

अतीत में भारत में मोहम्मद गौरी एवं गजनवी द्वारा देश पर आक्रमण एवं लूटपाट ने भारतीय सभ्यता एवं श्रमण संस्कृति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। यहां के हिन्दु एवं जैन मंदिरों की सांस्कृतिक धरोहर एवं धन सम्पदा को लूटकर भारत से बाहर ले जाने का सिलसिला थम नहीं रहा था ऐसे में तत्कालीन जैन आचार्यों की दूरदृष्टि एवं बुद्धिमत्ता से जैन मूर्तियों, आगमों, ग्रन्थों, प्राचीन ताड़–पत्रों, हस्त लिखित लेख पत्रों सहित अनेक बहुमूल्य सामग्री को सुरक्षित रख श्रमण संस्कृति की अमूल्य धरोहरों को सहेजने का काम किया।

भगवान् महावीर ने अपने प्रवचनों में तप, त्याग और वैराग्य पर अधिक ध्यान दिया। जीवन की भौतिक सुख सुविधाओं के प्रति उनकी अभिरुचि नहीं थी इस कारण समाज और सामाजिक रीति–रिवाजों का भी कोई उल्लेख और राजनैतिक चर्चाओं का विवरण उनके उपदेशों में कम ही होता था।

निस्संदेह महावीर गुणों की पराकाष्ठा हैं। पराकाष्ठा है इसीलिए वे गुणातीत भी है। हम उनकी प्रतिबद्धता का एक कण भी उठा अपने जीवन में सजा लें तो हमारा जीवन आनंदमय हो जाए और सार्थक भी।

संपूर्ण मानवता को प्रेरणा देते रहेंगे भगवान् महावीर! जैसे दिव्यात्मा युग–युगान्तर तक याद किये जाते रहेंगे।

सागर की गहराई से भी गहरा है जिनका ध्यान।
आकाश की ऊंचाई से भी ऊँचा है जिसका नाम।
धोर उपसर्ग, अपार कष्ट सहें, समय भावों से।
ऐसे मृत्युंजयी, कालजयी भगवान् महावीर को प्रणाम।

सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज : सदा आते हैं याद

-डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर (म.प्र.)

२०वीं शताब्दी में एक ओर जहाँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जहाँ सम्पूर्ण भारत प्रभावित रहा वहीं उन्हीं की परम्परा में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के उत्तराधिकारी सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संपूर्ण भारतवर्ष (उत्तर, दक्षिण) प्रभावित हुए। आपने अपनी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र राजधानी दिल्ली को बनाया और वहाँ कुन्दकुन्द भारती की स्थापना की जहाँ प्राकृत खारवेल भवन के माध्यम से प्राकृत भाषा साहित्य के विकास की धारा बह निकली और जुलाई, १९८८ में प्राकृत विद्या नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन हुआ। जिसने प्राकृत भाषा के गौरव को प्रतिष्ठापित किया और शौरसैनी प्राकृत साहित्य विद्वानों के मन-मस्तिष्क में छा गया। लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ में प्राकृत एवं जैनदर्शन विभाग की स्थापना आपकी प्रेरणा से हुई और दक्षिण के अनेक विश्वविद्यालयों में प्राकृत शिक्षण प्रारंभ हुआ। प्राकृत भाषा की विशेषता के विषय में कहा है कि-

अहो तत्प्राकृतं हारि प्रिया वक्त्रेन्दु सुन्दरम्।
सूक्तयो यत्र राजन्ते सुधानिष्यन्दनिर्झराः।।

अहो! वह प्राकृत, प्रिया के मुखचन्द्र के समान है जहाँ पर सूक्ति झरना से प्रवाहित होते हुए अमृत समान सुशोभित होती है।

गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान के महामस्तकाभिषेक महोत्सव को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में आपकी ही प्रेरणा बलवती रही। वे धर्म की संकीर्णता को नहीं मानते थे। उनका कहना था कि भारत एक गणराज्य है, प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र माने प्रजा का, प्रजा के द्वारा, प्रजा के लिए शासन। प्रजा में सम्पूर्ण सम्प्रदाय गर्भित हैं। प्रजातंत्र वह है जो बहुजन हिताय हो, बहुजन सुखाय हो। विभिन्न राजनेताओं से उन्होंने इसी विचारधारा पर आधारित विमर्श किया और समाज में सकारात्मक क्रांति के लिए प्रेरित किया। उनके विचारों के मूल में अहिंसा थी, अपरिग्रह था और अनेकान्तवाद था। वे हर समय स्वाध्यायशील रहते थे। स्वाध्याय से वे जो महत्त्वपूर्ण विचार प्राप्त करते थे उसे विद्वानों को बताकर प्रकाशित करवाते थे। उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक एकता के लिए कहा कि कैंची नहीं, सुई बनो। बिखराव नहीं अपितु संगठन के लिए कार्य करो। उन्होंने बार-बार कहा कि मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ। ये तीन सूत्र कालजयी सूत्र हैं जो समाज के लिए, संस्कृति के लिए हितकर हैं। वे सैद्धांतिक चर्चा में विश्वास रखते थे। उन्हें ज्ञान का भण्डार या आज की भाषा में गूगल गुरु कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्हें भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली के प्रति महान्अनुराग था। वैशाली के विकास के लिए उनकी प्रेरणाएं सदा उल्लेखनीय रहेगी।

आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज ने बद्रीनाथ की यात्रा की और तीर्थंकर ऋषभदेव की मूल मूर्ति के दर्शन किए, बाद में उनके उपदेशों से वहां अष्टापद जैन तीर्थ की स्थापना हुई। इससे तीर्थंकर ऋषभदेव की निर्वाण भूमि अष्टापद-कैलाश पर्वत जैन तीर्थ यात्रियों के यात्रा पथ एवं दृष्टि में आ गया। बावनगजा बड़वानी, कुंभोज बाहुबली, गोम्मटगिरि इन्दौर आदि अनेक तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में आपका अतुलनीय योगदान रहा है। जैन साहित्य के संरक्षण, जैन विद्वानों के सम्मान, पुरस्कार, गोम्मटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक, साहित्य प्रकाशन, राजनैतिक क्षेत्र में जैनधर्म, समाज एवं गुरुओं की प्रतिष्ठा, जैन पत्रकारिता के संरक्षण एवं विकास के लिए उन्हें सदा याद किया जायेगा।

जैन कमल को मरुधरा रत्न पुरस्कार

चित्रकार और अक्षर विन्यासी जैन कमल को प्रख्यात सरोद वादक पं. ब्रज नारायण के हाथों 'मरुधरा रत्न पुरस्कार' प्रदान किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रबंधकारिणी समिति की प्रथम बैठक श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र में सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रबंधकारिणी समिति की प्रथम बैठक श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ अतिशय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र रामनगर किला (बरेली) में शनिवार दिनांक ३० मार्च 2024 को तीर्थक्षेत्र कमेटी के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद की राष्ट्रीय अध्यक्षता में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुई। जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी के अंचलों के अध्यक्ष, मंत्री विभिन्न तीर्थक्षेत्रों के प्रतिनिधि एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रबंधकारिणी समिति के सदस्य सम्मिलित हुए और तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन पर विचार रखे।

भगवान पार्श्वनाथ का चित्र अनावरण एवं दीपप्रज्ज्वलन कर श्री शरद जैन (सांध्य महालक्ष्मी) के मंगलचारण से सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

प्रबंधकारिणी समिति की इस महत्त्वपूर्ण बैठक में सर्वसम्मति से तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के विस्तार की घोषणा की जिसमें निम्न राष्ट्रीय पदाधिकारियों का चयन किया गया-

- श्री प्रदीप नेमीचंद जैन (पीएनसी), आगरा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
- श्री सुरेशचंद प्रेमप्रकाश जैन कुलाधिपति टीएमयू, मुरादाबाद राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
- श्री नीलम चम्पतराय अजमेरा, उस्मानाबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
- श्री विजय प्रकाशचंद जैन, अहमदाबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
- श्री संजय पन्नालाल पापड़ीवाल औरंगाबाद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
- श्री संतोष सुन्दरलाल जैन पेंढारी, राष्ट्रीय महामंत्री
- श्री अशोक कांतिलाल दोशी, मुम्बई, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
- श्री वीरेश निर्मलकुमार जैन (सेठ), जबलपुर, राष्ट्रीय मंत्री
- श्री जयकुमार जीतमल जैन (कोटावाले), राष्ट्रीय मंत्री
- श्री हंसमुख सोहनलाल जैन गांधी, इंदौर, राष्ट्रीय मंत्री
- डॉ. जीवनप्रकाश लख्मीचंद जैन, हस्तिनापुर, राष्ट्रीय मंत्री के रूप में मनोनीत किये गये।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष समाज श्रेष्ठि श्री जम्बूप्रसाद जी जैन, गाजियाबाद, महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी सहित सभी चुने हुए नए पदाधिकारियों का तिलक माला आदि से सम्मान किया गया।
इस मौके पर तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण व संवर्द्धन पर मंथन किया गया। तीर्थक्षेत्रों का विकास एवं प्राचीनता, संरक्षण, संवर्द्धन, ज्वलंत समस्याओं पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन, गाजियाबाद ने

प्रबन्धकारिणी समिति की

प्रबन्धकारिणी समिति की मीटिंग

प्रबन्धकारिणी समिति की मीटि

कहा कि तीर्थक्षेत्र हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान हैं। तीर्थक्षेत्र हमारी आस्था, श्रद्धा के केन्द्रबिन्दु हैं। मूर्तियां, तीर्थ क्षेत्र एवं वास्तुकला के विशिष्ट प्रतिमान हैं। इनके संरक्षण के लिए सभी को आगे आना चाहिए। सभी तीर्थ तीर्थक्षेत्र कमेटी से जुड़ें यही हमारा सर्वप्रथम प्रयास है।

इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री श्री संतोष जैन पेंढारी वर्ष २०२४-२५ का अनुमानित पत्रक (बजट) सभी सदस्यों के समक्ष रखा जिसका सभी

ने अनुमोदन किया।

महामंत्री संतोष जैन पेंढारी ने सम्मेदशिखर जी, श्री गिरनार जी, श्री ऋषभदेव केशरिया जी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर आदि तीर्थों के चल रहे केसों की अद्यतन जानकारी साझा की।

श्री गिरनार जी क्षेत्र पर जानकारी देते हुए श्री पारस बज से सभा में उपस्थित सभी सदस्यों के प्रश्नों का समाधान किया पश्चात श्री गिरनार जी क्षेत्र पर तीर्थक्षेत्र कमेटी का कार्यालय खोले जाने का सुझाव दिया गया जिस पर महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने एक पर विचार कर निर्णय लिए जाने का आश्वासन दिया।

उत्तर प्रदेश उत्तरांचल कमेटी के अध्यक्ष जवाहर लाल जैन ने कहा कि प्राचीन तीर्थ, मंदिर मूर्तियां हमारी अनमोल धरोहर हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थों के संरक्षण संवर्द्धन के लिए संकल्पित है।

अधिवेशन में वक्ताओं ने तीर्थों पर संतों के चातुर्मास, तीर्थों का सर्वेक्षण, अच्छी व्यवस्था, प्रत्येक मंदिर तीर्थों पर सीसीटीवी कैमरे, आंचलिक कमेटियों की सक्रियता और आंचलिक कमेटियों को बजट का प्रावधान आदि अनेक सुझाव दिए गए।

बैठक का संचालन महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने किया तथा आयोजन श्री जवाहरलाल जैन अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उत्तराखंड तीर्थक्षेत्र कमेटी के कुशल संयोजन में किया गया।

दिनांक ३१ मार्च २०२४ को श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों की प्रथम बैठक संपन्न

द्वितीय दिवस भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय पदाधिकारियों की प्रथम सानंद संपन्न हुई। इस बैठक में महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लिया गया साथ ही तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण संवर्धन एवं विभिन्न क्षेत्रों पर हो रहे अतिक्रमण से क्षेत्र को बचाने तथा चल रहे मुकदमों आदि के लिए रूपरेखा बनाकर आगे कार्य करने का संकल्प लिया गया। साथ ही अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हमें सभी एक साथ एक स्वर में कार्य करने की महती आवश्यकता है हम सभी को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को और अधिक उचाईयों तक लेकर जाना है जिसमें सभी अंचलों एवं पदाधिकारियों का सहयोग हमें बराबर बना रहे जिससे हम भारत के कोने – कोने में स्थापित तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण संवर्धन कर सकें।

उत्तरांचल उत्तराखंड के आंचलिक अधिवेशन श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पर सम्पन्न

तीर्थक्षेत्र कमेटी के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष का किया गया सम्मान

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश उत्तराखंड अंचल अधिवेशन दिनांक 31 मार्च 2024 को श्री अहिच्क्षेत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रामनगर किला, बरेली (उ.प्र.) में सम्पन्न हुआ।

इस अधिवेशन में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय पदाधिकारी, विभिन्न अंचलों के अध्यक्ष एवं पदाधिकारीगण तथा उत्तरप्रदेश उत्तरांचल के विभिन्न तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारी एवं समाजश्रेष्ठी उपस्थित रहे।

मंगलचारण डॉ. जीवनप्रकाश जैन हतिनापुर ने किया । उपस्थित महानुभावों ने तीर्थों के

संरक्षण, संवर्द्धन पर विचार रखे तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष समाज श्रेष्ठी जम्बूप्रसाद जैन, गाजियाबाद, महामंत्री संतोष जैन पेंढारी एवं समस्त पदाधिकारी महानुभावों का भावभीना सम्मान किया गया। बुंदेलखंड, ललितपुर जनपद की ओर से देवगढ़ तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष श्री अनिल अंचल (उपाध्यक्ष उत्तरप्रदेश उत्तराखंड तीर्थक्षेत्र कमेटी), शांतोदय अतिशय क्षेत्र चांदपुर जहाजपुर के अध्यक्ष डॉ.

अरविन्द जैन, महामंत्री श्री धन्यकुमार जैन एडवोकेट, महामहिम डॉ. महेंद्र कुमार जैन, प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र नवागढ़ के महामंत्री श्री वीरचन्द्र जैन नेकौरा, नवागढ़ गुरुकुलम के कोषाध्यक्ष श्री आनंदी लाल लुहर्रा, प्रचारमंत्री (मंत्री उत्तरप्रदेश उत्तराखंड तीर्थक्षेत्र कमेटी) डॉ. सुनील संचय, श्री सुरेंद्र सोजना, एडवोकेट श्री संदीप सोजना, सतोदय अतिशय क्षेत्र सिरोन जी (ललितपुर) के श्री सुरेश बाबू एडवोकेट, अतिशय क्षेत्र सिरोन जी (मड़ावरा) के डॉ. राकेश जैन, अतिशय क्षेत्र कारीटोरन से डॉ. विजय जैन, अतिशय क्षेत्र मदनपुर के महामंत्री श्रीपाल जैन बमराना, अतिशय क्षेत्र आहार जी के अध्यक्ष श्री महेंद्र कुमार जैन आदि ने अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद का प्रस्तुती भेंट कर सम्मान किया।

इस मौके पर तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण व संवर्द्धन पर मंथन किया गया। तीर्थ क्षेत्रों का विकास एवं प्राचीनता पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बूप्रसाद गाजियाबाद ने कहा कि तीर्थक्षेत्र हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान हैं। उत्तर प्रदेश उत्तरांचल कमेटी के अध्यक्ष जवाहर लाल जैन ने कहा कि प्राचीन तीर्थ, मंदिर मूर्तियां हमारी अनमोल धरोहर हैं।

इस मौके पर जनपद ललितपुर में स्थित देवगढ़, नवागढ़, चांदपुर-जहाजपुर, सिरोंन जी, मदनपुर, कारीटोरन, गिरार, पवाजी, बानपुर, बालाबेहट, दुधई आदि क्षेत्रों के बारे में अवगत कराया गया।

- हमारी संस्कृति, आस्था के प्रतीक हैं तीर्थक्षेत्र। बुंदेलखंड में हमारी विरासत बिखरी पड़ी है। इन प्राचीन क्षेत्रों की धरोहर के संरक्षण और संबर्द्धन के लिए आगे आएं। - अनिल जैन अंचल, अध्यक्ष तीर्थक्षेत्र देवगढ़ बुंदेलखंड, ललितपुर में अनेक प्राचीन ऐतिहासिक विरासत समेटे अतिशय व सिद्ध क्षेत्र हैं। ये हमारी विरासत की अमूल्य धरोहर और हमारी पहचान हैं। ये तीर्थ, मंदिर, मूर्तियां हमारे अतीत के गौरव हैं। - डॉ. सुनील संचय, मंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड
- ललितपुर में जगह-जगह प्राचीन तीर्थक्षेत्र हैं, ये हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान हैं।- डॉ अरविंद जैन अध्यक्ष अतिशय क्षेत्र चांदपुर जहाजपुर
- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एक बहुत पुरानी और प्रमुख संस्था है। नव निर्वाचित अध्यक्ष महोदय से काफी अपेक्षाएं हैं। प्रागैतिहासिक तीर्थ नवागढ़ के

योजनाओं और महत्व से उन्हें अवगत कराया है- वीरचन्द्र जैन महामंत्री प्रागैतिहासिक तीर्थ नवागढ़

- प्राचीन तीर्थक्षेत्र हमारी आस्था, श्रद्धा के केन्द्रबिन्दु हैं। मूर्तियां, तीर्थ क्षेत्र एवं वास्तुकला के विशिष्ट प्रतिमान हैं- एडवोकेट धन्यकुमार जैन महामंत्री अतिशय क्षेत्र चांदपुर जहाजपुर

- प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित, स्वच्छ रखना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

इस मौके पर उत्तर प्रदेश-उत्तराखण्ड तीर्थक्षेत्रों के परिचय की स्मारिका विमोचन किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी गाजियाबाद की **'मेरा स्वप्न : तीर्थक्षेत्रों का विकास'** पुस्तक सभी को दी गयी जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष ने तीर्थक्षेत्रों के प्रति अपने विजन का उल्लेख विस्तार से किया है। इस दौरान अनेक तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारीगण बड़ी संख्या में मौजूद रहे। इन सभी आयोजनों को सफल बनाने में उत्तरप्रदेश उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन, सिकंदराबाद एवं अंचल के समस्त पदाधिकारियों तथा श्री अहिच्छेत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र के पदाधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। दिनांक ३० एवं ३१ मार्च २०२४ के इन दो दिनों के आयोजन पर क्षेत्र पर पधारे सभी महानुभावों की आवास एवं भोजन आदि सभी प्रकार की उच्चतम व्यवस्थायें की गयी थी।

कुंडलपुर में आचार्य पदारोहण अनुष्ठान महामहोत्सव में शामिल होंगे संघ प्रमुख डॉक्टर मोहन भागवत जी

दिगम्बर जैनाचार्य, समाधि सम्राट, परम पूज्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की परम्परा में नये आचार्य पद पदारोहण अनुष्ठान महामहोत्सव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख आदरणीय डॉक्टर मोहन भागवत जी उपस्थित रहेंगे। यह महामहोत्सव १६ अप्रैल २०२४, मंगलवार को कुंडलपुर में बड़ेबाबा देवाधिदेव श्री आदिनाथ भगवान के चरण सान्निध्य में होगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री संतोष जैन पेंडारी के नेतृत्व में जैन समाज का प्रतिनिधि मंडल नागपुर में डॉक्टर मोहन भागवत जी से मिला। महामहोत्सव समिति के प्रशासनिक संयोजक रवीन्द्र जैन पत्रकार ने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. भागवत जी ने गौर से सुनकर इस महोत्सव में आने की स्वीकृति प्रदान कर दी। प्रतिनिधि मंडल में महोत्सव की सह संयोजक डॉ. सुधा मलैया, कुंडलपुर कमेटी के महासचिव आरके जैन, सिद्धार्थ मलैया, स्वतन्त्र जैन खिमलासा, प्रभात सेठ, ललित जैन आदि उपस्थित थे।

चर्चा करते हुए केन्द्रीय मंत्री एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री

केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी पधारे महामंत्री श्री संतोष पेंढारी के गृह निवास पर

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी के नागपुर स्थित घर पर भोजनार्थ पधारे ! केन्द्रीय मंत्री के आगमन पर श्री संतोष जैन पेंढारी सपरिवार ने उनका ससम्मान स्वागत किया।

बहुचर्चित व्यक्तित्व -
परम पूज्य निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी का दीक्षा दिवस

- डॉ. नरेन्द्र जैन 'भारती', सनावद

जैन धर्म एवं संस्कृति में मानव के लिए मुनि दीक्षा का विशेष महत्व है। दीक्षा धारण करने वाला महामानव जगत पूज्य बनता है। बोधप्राभृत में आचार्य श्री कुंद कुंद स्वामी लिखते हैं - जो गृहवास व परिग्रह के मोह से रहित होती है, जिसमें 22 परीषहों को सहा जाता है, कषायें जीती जाती हैं, जो पाप के आरंभ से रहित होती हैं ऐसी दीक्षा जिनेंद्र देव ने कही है। जो शत्रु-मित्र, प्रशंसा-निंदा, हानि- लाभ, तृण - स्वर्ण में समान भाव रखती है ऐसी जिन दीक्षा कही गई है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध कथा इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध में जिनशासन प्रभावक परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर ने जैन धर्म में दिगंबर मुनि परंपरा के अनुरूप स्वयं चलकर और संघ के साधुओं को मुनि धर्म के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन कराकर माघ कृष्ण अष्टमी के दिन प्रसिद्ध जैन तीर्थ चंद्रगिरी डोंगरगढ़ में समाधिमरण पूर्वक देह त्याग किया। आपके संघ में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा प्रथम मुनि दीक्षित निर्यापक श्रमण मुनि श्री समय सागर जी हैं।

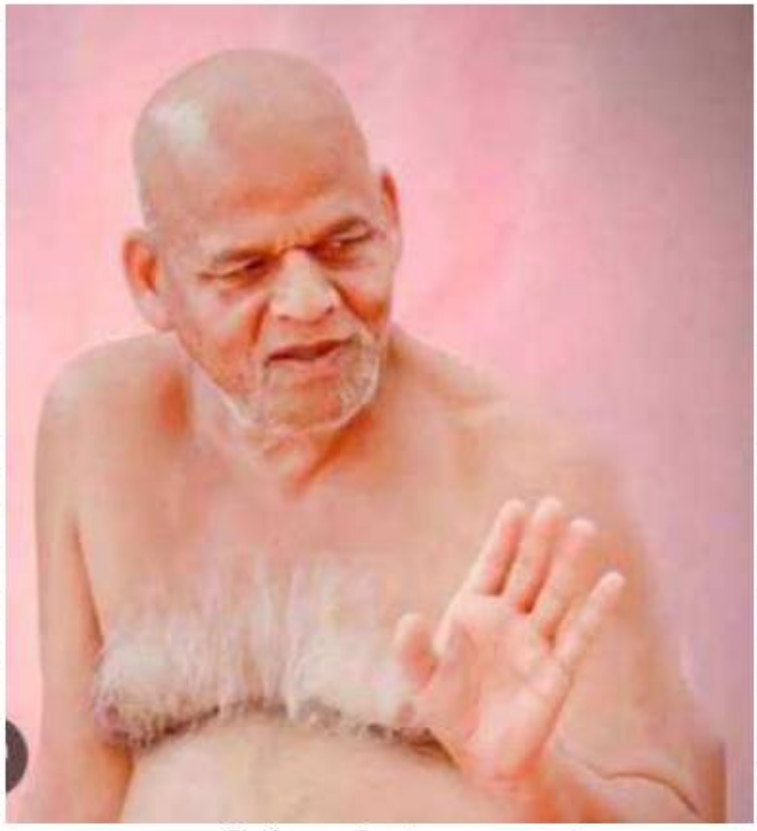

पूज्य निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी

परम पूज्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज को मुनि दीक्षा ग्रहण किये हुए पैतालीस साल हो गए हैं। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से चैत्र कृष्ण पंचमी को आपने सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि जी पर मुनि दीक्षा लेकर इस भावना को साकार रूप प्रदान किया था कि उनकी संसार, शरीर और भोगों में कोई रुचि नहीं है। पूज्य आचार्य श्री के गृहस्थावस्था के भाई ने 27 अक्टूबर 1958 को कर्नाटक के ग्राम सदलगा में जन्म लेकर 2 मई 1975 को ब्रह्मचर्य व्रत, 28 दिसंबर 1975 को क्षुल्लक दीक्षा तथा 31 अक्टूबर 1978 को अतिशय क्षेत्र नैनागिरि जी क्षेत्र पर ऐलक दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पिता श्रीमान मलप्पा जी अष्टगे भी मुनि दीक्षित होकर मुनि श्री मल्लिसागर जी बने। परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागर जी महाराज का जीवन सहज, सरल एवं स्वाभाविक है। इसी से यह सिद्ध होता है कि वे मुनि अवस्था में भी शांति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। आपने मुनि दीक्षा धारणकर पूज्य गुरुदेव की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य कर अपनी गुरु भक्ति तथा वैराग्य भावना का महान आदर्श उपस्थित किया। आचार्य जी के आज्ञानुसार आपने निर्यापक श्रमण के रूप में पूज्य गुरुवर के सभी निर्देशों का पालन किया। संघ के साधुओं को भी नियमित मुनिचर्या के अनुरूप कार्यों के लिए प्रेरित करते हैं । आपकी ज्ञान, ध्यान और तप साधना अनुपम है। संयम के साथ "सादा जीवन उच्च विचार" के भाव के साथ आप सदाचरण का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं क्योंकि आपका मानना है कि शुद्ध आचरण से ही आत्मा का कल्याण संभव है। अतः आप हमेशा ज्ञानार्जन और स्वाध्याय को जीवन का अनमोल कार्य बताकर आत्म साधना में लीन रहते हैं। शरीर का उपयोग तप साधना के लिए करते हैं। आहार उतना ही ग्रहण करते हैं जिससे शरीर धर्म साधना के लिए समर्थ बना रहे। आपका मुनि जीवन हमेशा श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धा और आस्था का केंद्र रहा है। कुछ वर्षों पूर्व आपका आगमन सनावद (जिला खरगोन) के समीप स्थित ग्राम मोरटक्का की ओंकारबाग जैन धर्मशाला में हुआ था। आपके संघ में सनावद में जन्मे तथा आचार्य जी से मुनिदीक्षित श्री प्रशस्तसागर जी महाराज का भी आगमन हुआ था। उस समय आपका आशीर्वाद मुझे मिला था। आपके दर्शन इसके पूर्व कई बार आचार्य श्री के संघस्थ मुनियों के रूप में हुए थे परंतु निर्यापक श्रमण बनने के बाद दर्शन करने का अवसर मोरटक्का में प्राप्त हुआ। मैंने देखा कि निर्यापक श्रमण के रूप में आप अपने संपूर्ण दायित्वों और कर्तव्यों को सजगता से निभा रहे हैं। परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समाधिस्थ होने पर उनके समीप रहे पूज्य निर्यापक मुनि श्री योगसागर जी महाराज ने बताया कि आचार्य श्री की परंपरा के आगामी आचार्य श्री समयसागर जी होंगे । आपके पदारोहण समारोह १६ अप्रैल की तैयारी प्रसिद्ध जैन तीर्थ कुंडलपुर में आरंभ हो गई है। आपके मुनि दीक्षा दिवस के अवसर पर हम सभी श्रद्धालु जन सादर नमोस्तु निवेदित करते हैं।

गन्धर्वपुरी में पांच प्राचीन अम्बिका प्रतिमाएँ

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इंदौर

मध्यप्रदेश के देवास जिलान्तर्गत सोनकच्छ प्रखण्ड के गन्धर्वपुरी ग्राम में ८वीं शताब्दी से १६वीं शताब्दी तक की सैकड़ों जैन प्रतिमाएं हैं जिनमें अधिकतर १०वीं, ११वीं और १२वीं शताब्दी की प्रतिमाएं हैं। यहां तीर्थंकरों के शासनदेव–देवियों की भी बीसों प्रतिमाएँ हैं, उनमें अम्बिका–मूर्तियां प्रमुख हैं।

डॉ. नरेश पाठक जी ने यहां की एक भग्न अंबिका प्रतिमा का परिचय दिया है, आलेख लिखते समय उनकी दृष्टि में अन्य अम्बिका प्रतिमाएं आईं नहीं होंगी या संकलित ही नहीं हुई होंगी। दिनांक ३१ दिसम्बर २०२३ को 'श्री राष्ट्रीय जैन प्राच्यविद्या अनुसंधान संगठन' की टीम के अन्तर्गत हम शोध–सर्वेक्षण हेतु गंधर्वपुरी पहुँचे थे और वहां के फोटोग्राफ तथा अन्य विवरण लिये। इन प्रतिमाओं के छायाचित्र जब हमने सूक्ष्मता से देखे तो यहाँ हमें वहां की छः अम्बिका प्रतिमाएं मिलीं, जिनमें दो खंडित थीं एक का उदर से ऊपर का भाग और एक का अधोभाग। हमने कम्प्यूटर पर जब दोनों खण्डों को मिलाय तब ये एक ही प्रतिमा के दोनों भाग परिलक्षित होते हैं। इसी के ऊपरी भाग का उल्लेख पाठक जी ने अपने ग्रन्थ में किया है।

तीर्थंकरों के यक्ष–यक्षिणियों में सबसे अधिक मूर्तियां नेमिनाथ

अम्बिका प्रतिमा, गन्धर्वपुरी, सोनकच्छ, देवास (म.प्र.), १०वीं-११वीं शती ईस्वी

की यक्षिणी अम्बिका देवी की पाई जाती हैं। अम्बिका का कथानक गिरनार से जुड़ा है। मूर्ति–निर्माण शास्त्रों, प्रतिष्ठाग्रन्थों, पुराणों में अन्य शासन देव–देवियों के साथ अबिका का भी वर्णन है।

एक- अम्बिका की अप्रतिम प्रतिमा

गन्धर्वपुरी के ३५६ पुरातात्त्विक प्रतिमा व प्रस्तरों में एक अम्बिका प्रतिमा अप्रतिम व गजब की कलात्मक और सौन्दर्ययुक्त है। अधिकांश उदाहरणों में शासनदेव–देवियों के वितान अर्थात् ऊपर के भाग में एक लघु जिन प्रतिमा शिल्पांकित रहती है, जिससे उसकी शासनदेव–देवी होने की पहचान होती है। प्रायः जिस तीर्थंकर की शासनदेवी होती है, उन्ही तीर्थंकर की प्रतिमा बनाई जाती है, किन्तु इस प्रतिमा के वितान में पांच पद्मासनस्थ जिन दर्शाये गये हैं। उनमें मध्य की जिन प्रतिमा कुछ बड़ी है। इनके शिरोभाग के मध्य के अन्तराल में केवलज्ञान वृक्ष का पत्र–गुच्छ प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है।

अम्बिका के शिर के पृष्ठभाग से ऊपर को आम्र वृक्ष की पांच डालियों की शाखाओं से शिर आच्छादित है। आम्र वृक्ष का आच्छादन

अम्बिका प्रतिमा, गन्धर्वपुरी, सोनकच्छ, देवास (म.प्र.), ११वीं-१२वीं शती ईस्वी

कलात्मक है। इन शाखाओं में से दोनों ओर तीन–तीन पत्रदल गुच्छक हैं, उन कलात्मक गुच्छकों के मध्य से आम्र–फलों के गुच्छा हैं। डालियों पर दोनों ओर एक–एक बानर अठखेलियां करते दर्शाये गये हैं। दोनों बानरों की भाव–भंगिमायें फल तोड़ते हुए की अलग–अलग हैं।

आम्र वृक्ष की छाया में बैठी अम्बिका के केशों की सज्जा सुन्दर है। सिर पर गोल, मोटा सा मुकुट अर्धचन्द्राकार में निर्मित कर आभूषित किया गया है। कानों में कर्णावतंस हैं, जिनके कर्णफूल स्कंधों के ऊपर तक लटक रहे दर्शाये गये हैं। गले में पंचावली स्तनहार नाभि तक लगटकता हुआ शोभित है। इसके अतिरिक्त पांच तरह के आभरण और पहने दर्शाये गये हैं, जिनमें एकावली, मौक्तिक हार, उपग्रीवा, हीक्का सूत्र, कण्ठिका हैं। कमर में कटिमेखला, उरुद्दाम और मुक्तदाम आभरित हैं। अधोवस्त्र भी धारण किये हुए तरासा गया है। इस द्विभुजा प्रतिमा का दाहिना हाथ टिहुनी तक ही है, शेष टूटा हुआ है। इस हाथ में प्राय: आम्रगुच्छक धारण किये हुए दर्शाया जाता है। अम्बिका के बायें मुड़े हुए पाद की टांक पर एक बालक बैठा है। जिसे अम्बिका बायें हाथ से सम्हाले हुए है। बालक की भी केशसज्जा है या घुंघराले बाल हैं। बालक भी आभरण भूषित है। बालक दाहिने हाथ से मां के वक्षस्थल पर झूलते हुए हार से खेल रहा है और बायें हाथ में एक फल धारण किये हुए है।

ललितासनस्थ अम्बिका सिंह पर स्थित कमलासन पर

अम्बिका प्रतिमा, गन्धर्वपुरी, सोनकच्छ, देवास (म.प्र.), ११वीं-१२वीं शती ईस्वी

विराजमान है। इसका दाहिना पाद नीचे को लटका है। आसन के दोनों ओर एक–एक मानवाकृति है, सम्भत: यह आराधक युगल है। बायें तरफ स्त्री भक्त और दाहिनी ओर पुरुष भक्त बैठा हुआ है।

द्वितीय अम्बिका प्रतिमा- यह वही प्रतिमा है जिसके दो भागों का हमने उल्लेख किया है। इसका अधोभाग भग्न है, फिर भी आकृतियां देखीं जा सकती हैं। यह भी बैठे हुए सिंह पर आसीन है। आसन के बायें तरफ एक नन्हा बालक खड़ा है। दाहिनी तरफ का बालक पैरों को कुछ फैलाकर बैठा हुआ है। अम्बिका के पाद और कटि आभरण–भूषित है।

शेष अगले अंक में.....

पूर्ण स्वाधीनता के पुरोधा तीर्थंकर ऋषभदेव

प्रो. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली

जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म चैत्र शुक्ला नवमी को अयोध्या में हुआ था तथा माघ कृष्णा चतुर्दशी को इनका निर्वाण कैलाशपर्वत से हुआ था। आचार्य जिनसेन के आदिपुराण में तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन चरित का विस्तार से वर्णन है।ऋषभदेव का भारत के स्वाभिमान ,स्वावलंबन और स्वाधीनता के लिए अतुलनीय योगदान है।

स्वावलंबन की आधारशिला -

तीर्थंकर ऋषभदेव ने स्वावलंबी होना सिखाया। पौराणिक मान्यता है कि पहले भोगभूमि थी और मनुष्यों की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति कल्पवृक्ष से हो जाती थी अतः वे परिश्रम नहीं करते थे। कर्म भूमि के प्रारंभ होते ही कल्पवृक्ष समाप्त होने लगे। मनुष्यों के सामने संकट खड़ा हो गया कि वे जीवन का निर्वहन कैसे करें? अयोध्या के राजा ऋषभदेव ने लोगों को खेती करना और अन्न उपजाना सिखाया। उन्होंने षट्कर्म की शिक्षा दी - **असि,मसि,कृषि ,विद्या ,वाणिज्य और शिल्प**। भारत के मनुष्यों को सबसे पहले इन षट्कर्मों के माध्यम से स्वावलंबी बनाया।

स्त्री शिक्षा और सशक्तिकरण-

तीर्थंकर ऋषभदेव ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति की। वे जानते थे कि स्त्री शिक्षित होकर ही स्वावलंबी और सशक्त हो सकती है। सर्वप्रथम उन्होंने ॐ नमः सिद्धं मन्त्र का उच्चारण करवाकर अपनी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी और सुन्दरी को गोद में बैठाकर क्रमशः दायें हाथ से लिपि विद्या और बाएं हाथ से अंक विद्या (गणित) की शिक्षा दी। यही कारण है कि आज भी इकाई दहाई संख्या की गणना बायीं ओर से की जाती है। अक्षर अर्थात् वर्णमाला दायीं ओर से पढ़ी जाती है। भारत में सबसे प्राचीन लिपि जिसमें सम्राट अशोक के शिलालेख लिखे गए थे उसका नाम ब्राह्मी लिपि ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी के नाम पर ही पड़ा।

पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा -

तीर्थंकर ऋषभदेव ने दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र एक व्यवस्थित स्वतंत्रता की अवधारणा प्रस्तुत की और वह थी आत्मा को ही परमात्मा कहने की। **'अप्पा सो परमप्पा'** –यह उनका उद्घोष वाक्य था। उसके बाद शेष तेईस तीर्थंकर इसी दर्शन को आधार बना कर स्व-पर का कल्याण करते रहे। प्रत्येक मनुष्य तप के माध्यम से स्वयं अपने समस्त दोषों को दूर करके भगवान् बन सकता है अर्थात् कोई भी आत्मा किसी अन्य परमात्मा के आधीन नहीं है और वह पूर्ण स्वतंत्र है और मुक्ति को प्राप्त कर सकती है। उनका यह दर्शन उन्हें दुनिया के उन धर्मों से अलग करता है जो यह मानते हैं कि ईश्वर मात्र एक है तथा मनुष्य उसके आधीन है और मनुष्य स्वयं कभी परमात्मा नहीं बन सकता। ऋषभदेव का यह स्वर भारतीय दर्शन में भी मुखरित हुआ। उसकी चर्चा संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद इन शब्दों में करता है-

" त्रिधा बद्धोवृषभोरोरवीतिमहादेवोमत्यां आ विवेश॥"

इस मन्त्रांश का सीधा शब्दार्थ है-तीन स्थानों से बंधे हुये वृषभ ने बारंबार घोषणा की कि महादेव मनुष्यों में ही प्रविष्ट हैं। यह घोषणा आत्मा को ही परमात्मा बनाने की घोषणा है। आत्मा में परमात्मा के दर्शन करने के लिए मन, वचन, काय का संयम आवश्यक है। यह त्रिगुप्ति ही वृषभ का तीन स्थानों पर संयमित होना है। उपनिषदों ने भी घोषणा की- **अयम् आत्मा ब्रह्म**। वेदान्त ने तो इतना भी कह दिया कि सब शास्त्रों का सार यही है कि जीव ही ब्रह्म है- **जीवो ब्रह्मैवनापरः**। यदि धर्म दर्शन के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति को गैर-भारतीय संस्कृति से अलग करने वाला धर्म खोजा जाय तो वह है- आत्मा परमात्मा की एकता और इस तथ्य के अन्वेषण में तीर्थंकर ऋषभदेव का महत्वपूर्ण योगदान है।

पहला निःशस्त्रीकरण -

ऋषभदेव के प्रमुख दो पुत्र चक्रवर्ती भरत और बाहुबली के बीच जब युद्ध की नौबत आ गई और दोनों ओर सेनाएं खड़ी थीं तब यह विचार हुआ कि झगडा भरत और बाहुबली के बीच है तो सेना युद्ध करके क्यों मरे ? जन-धन की हानि क्यों हो ? संवाद के माध्यम से यह तय हुआ कि युद्ध बिना किसी शस्त्र के भरत और बाहुबली के बीच ही होगा। निर्णयानुसार बिना किसी शस्त्र के जल युद्ध ,मल्ल युद्ध और दृष्टि युद्ध हुआ और बाहुबली विजयी हुए ,बाहुबली ने जीतने के बाद भी राज्य भरत को दे दिया और स्वयं दीक्षा ग्रहण करके तपस्या करने चले गए। आज चारों तरफ युद्ध का वातावरण है,निःशस्त्रीकरण की अवधारणा सिर्फ इसीलिए आई थी कि शस्त्र होगा तो कभी न कभी युद्ध भी होगा और तबाही मनुष्य की ही होगी। इतिहास के अनेक युद्धों में अहिंसक युद्ध का और निःशस्त्रीकरण का पहला उदाहरण भी ऋषभदेव के समय में ही मिलता है।

देश का भारत नामकरण –

भारत के तीर्थंकर ऋषभदेव का मानव सभ्यता के विकास में इतना जबरजस्त योगदान था कि सिर्फ भारत की हिन्दू परम्परा ही नहीं बल्कि अनेक देशों की परम्पराओं में उनका उल्लेख प्राप्त होता है। इस देश ने तो अपना नाम ही ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम पर 'भारत' रखकर उनका उपकार माना है। सिर्फ जैन ग्रंथों में ही नहीं बल्कि वैदिक परंपरा के अनेक पुराणों में दर्जनों स्थान पर इस बात की उद्घोषणा भी की गई है। अग्निपुराण (१०/११) में उद्धरण है -

ऋषभोदात् श्री पुत्रे शाल्यग्रामे हरि गतः।
भरताद् भारतं वर्षं भरतात् सुमति स्त्वभूत्।।

जीवन जीने की कला का सूत्रपात -

तीर्थंकर ऋषभदेव ने स्वयं अयोध्या में राजपाठ तो किया ही किन्तु बाद में विरक्त होकर दीक्षा ग्रहण कर जंगलों में जाकर तपस्या की और कैवल्यज्ञान की प्राप्ति कर मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया। कृषि करो और ऋषि बनो – इस सूत्र के मंत्रदाता के रूप में उन्होंने जीवन जीने की कला सिखलाई। कृषि करना भी सिखाया और तदनंतर ऋषि बनना भी सिखाया। आज भी हमारा देश और कृषि और ऋषि प्रधान देश माना जाता है।

तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन में और उपदेश में प्रवृत्ति और निवृत्ति का अद्भुत समन्वय था ,शायद इसीलिए प्रवृत्ति प्रधान मानी जाने वाली वैदिक परंपरा और निवृत्ति प्रधान मानी जाने वाली श्रमण परंपरा दोनों के ही वे आराध्य हैं और दोनों के ही शास्त्रों में उनका पुण्य स्मरण अत्यंत श्रद्धा के साथ किया गया है। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को जोड़कर रखने वाले भगवान् ऋषभदेव के जन्मकल्याणक को सभी मिलकर मनाएं तो भारतीय संस्कृति का नया मार्ग प्रशस्त होगा।

शीतलतीर्थ रतलाम में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन सम्पन्न

परम पूज्य, समाधिस्थ आचार्य, श्री योगीन्द्रसागरजी महाराज की पावन प्रेरणा से स्थापित शीतलतीर्थ में सम्पन्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव (२२–२६ फरवरी २०२४) की पूर्व बेला में १७–१९ फरवरी २०२४ के मध्य त्रिदिवसीय राष्ट्रीय जैन विद्वत् सम्मेलन तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ के अध्यक्ष डॉ. अनुपम जैन के संयोजकत्व में आयोजित किया गया। इस सत्र में आपके द्वारा लिखित आचार्य योगीन्द्रसागर एवं शीतलतीर्थ पुस्तक का विमोचन भी किया गया। उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त ८ सत्रों में २४ आमंत्रित व्याख्यान हुए। ५५ से ज्यादा विद्वानों की सहभागिता वाले इस सम्मेलन का उद्घाटन मुनि श्री प्रशमसागर जी, मुनि श्री साध्यसागर जी, मुनि श्री संयतसागर जी एवं मुनि श्री निर्मोहसागर जी के पावन सान्निध्य तथा अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार जैन (बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी–वाराणसी) की अध्यक्षता एवं शास्त्री परिषद के महामंत्री डॉ. जयकुमार जैन 'निशान्त' (टीकमगढ़) के विशेष आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में देवी अहिल्या वि.वि., इन्दौर के पूर्व निदेशक प्रो. प्रभु नारायण मिश्र भी उपस्थित रहें। स्वागत उद्बोधन क्षेत्र की अधिष्ठात्री डॉ. सविता जैन (कार्याध्यक्ष–विद्वत् महासंघ) ने दिया। इस अवसर पर मुनि श्री प्रशमसागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि 'हमें अपने जीवन में परिश्रम करना चाहिए ताकि जिनशासन की मूल भावना के तहत विश्वशांति की स्थापना हो सके।' आपने कहा कि आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी ने अनेक आयोजन किए परन्तु अपना प्रयोजन नहीं भूले। जीवन के अन्तिम समय में भी आपने अपनी चर्या का निर्दोष पालन करते हुए समाधि का वरण किया। सत्र में श्री नरेन्द्र रारा एवं श्री हसमुख गाँधी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

विभिन्न तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता प्रो. प्रभु नारायण मिश्र, प्रो. के. एन. चतुर्वेदी, प्रो. शीतलचन्द जैन, प्रो. प्रेमसुमन जैन आदि विद्वानों ने की। प्रो. मिश्र ने पूज्य आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी के दुर्लभ संस्मरण सुनाये। द्वितीय दिवस जैन मंत्र विद्या पर विशेष सत्र आयोजित किया गया जिसमें मंत्र साधक डॉ. सोहनलाल 'देवोत' ने अपने संस्मरण सुनाए। इस अवसर पर डॉ. देवोत द्वारा लिखित जैन मंत्र विद्या : एक अध्ययन पुस्तक पर लिखित १४ समीक्षात्मक आलेखों की विद्वत् महासंघ द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन भी हुआ।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति प्रो. अवधेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि भारतीय संस्कृति का स्वरूप समावेशी है और यह विश्व बंधुत्व की पक्षधर है। स्वामी विवेकानंद ने इसे विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति माना और उसके विविध पक्ष आम जनता को बेहद सरलता से बताए। आपने कहा कि अध्यात्म और विज्ञान से ज्ञान की परंपरा जुड़ती है। आपने कहा कि उज्जैन में जैन तीर्थ महावीर तपोभूमि की लाइब्रेरी में जैन धर्म की पुस्तकों से मैंने जैन धर्म को जाना। आपने कहा कि विक्रम विश्वविद्यालय में आचार्य विद्यासागर शोधपीठ की स्थापना की गई है। इसमें जैन धर्म संबंधी कोर्स चालू करने के लिए जैन धर्म के प्रख्यात विद्वान प्रो. अनुपम जैन जैसे उर्जावान विद्वान के सहयोग की जरूरत है। मंच संचालन डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. संजीव सराफ और आभार डॉ. सुरेखा मिश्रा ने माना।

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी का पहला दौरा

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन का शिखरजी पधारने पर भव्य स्वागत-सम्मान किया गया

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेदशिखर जी मधुबन पधारने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष जी का स्वागत प्रथम शाश्वत ट्रस्ट के निहारिका परिसर, प्रकाश भवन, मधुबन कार्यालय तथा श्री शीतलनाथ जन्म कल्याणक भद्दलपुर के मधुबन कार्यालय पर किया गया। पुनः संध्या ७ बजे से शांतिसागर धाम में होने वाली परिचर्चा में उपस्थित जैन समाज के पुरुष महिला के साथ साथ संस्थाओं से पधारे लोगो ने भी बारी बारी से स्वागत किया जिसमे मुख्य रूप से जैन समाज

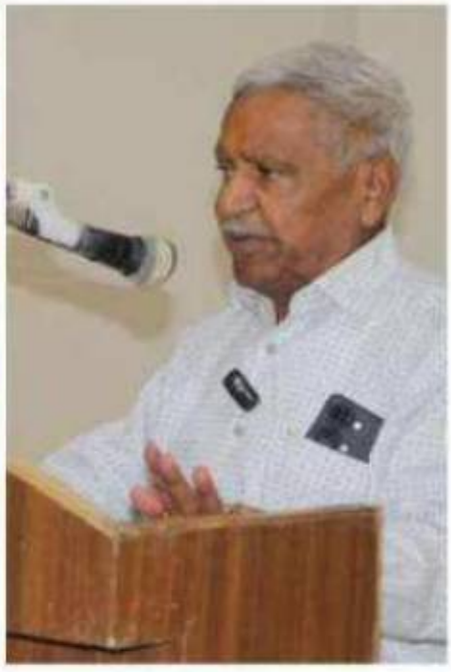

मधुबन के अध्यक्ष श्री सतेंद्र जैन, श्री विनोद जैन, श्री मनोज जैन श्री राहुल जैन, श्री दीपक जैन, श्री संजय जैन, श्री अमित जैन वेगैरह तथा जैन महिला मण्डल वहीँ श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी के श्री कपिल चौगुले, श्री मनोज जैन श्री रविवार जैन, श्री राजा जैन, श्री मनीष जैन श्री दीपक सिंह, श्री नागेंदर सिंह, गुणायतन न्यास के सी ई ओ श्री सुभाष जी जैन, श्री अमित मोदी, श्री अभिषेक जैन (तिगोड़ा) श्री दिगम्बर जैन शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जी अजमेरा, प्रबंधक श्री संजीव जैन, सईदी, श्री गंगाधर महतो, उत्तरप्रदेश प्रकाश भवन के प्रबंधक श्री इन्दरदेव शर्मा, श्री सुजीत कुमार सिन्हा जैन समाज कोडरमा से श्री सुरेश झाँझरी समाज के साथी वंही अंनिदा पार्श्वनाथ जिनले के श्री सुधीर जैन राजू जैन मुक्ता जैन आदि ने भी बारी बारी से तिलक वंदन कर माला पहना कर अंग वस्त्र भेट किये अध्यक्ष महोदय के साथ ही स्वस्ति श्री रविंद्रकीर्ति स्वामी जी ट्रस्टी श्री जवाहरलाल जैन सिकंदराबाद, श्री दिगम्बर जैन न्यास बोर्ड झारखंड के अध्यक्ष श्री ताराचंद जैन देवघर के पधारने पर सभी का मंच पर स्वागत सम्मान किया गया।

त्रियोग आश्रम में रखे गए आशीर्वाद समारोह में मधुबन की संस्थाओं में विराजमान सभी साधुओं साध्वियों का आगमन त्रियोग आश्रम में हुआ, वंहा काफ़ी बृहत कार्यक्रम हुए। जिसमे समर्थसागरजी जी महाराज का चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन १०८ श्री संभव सागरजी महाराज का पाद प्रक्षालन सामूहिक रूप से किया गया

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, शाखा कार्यालय पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन एवं ट्रस्टी श्री जवाहरलाल जी जैन के पधारने पर भव्य स्वागत, सम्मान पूर्वांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी झारखण्ड के महामंत्री श्री प्रभात सेठी, कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा, प्रबंधक श्री देवेंद्र कुमार जैन, पी आर ओ श्री पवन देव कुमार शर्मा आदि सभी कार्यकर्ताओं ने सामूहिक रूप से तिलक लगाकर, माला, पट्टा पहना कर अंग

वस्त्र एवं श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया अध्यक्ष महोदय ने एवं ट्रस्टी महोदय ने इस सम्मान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

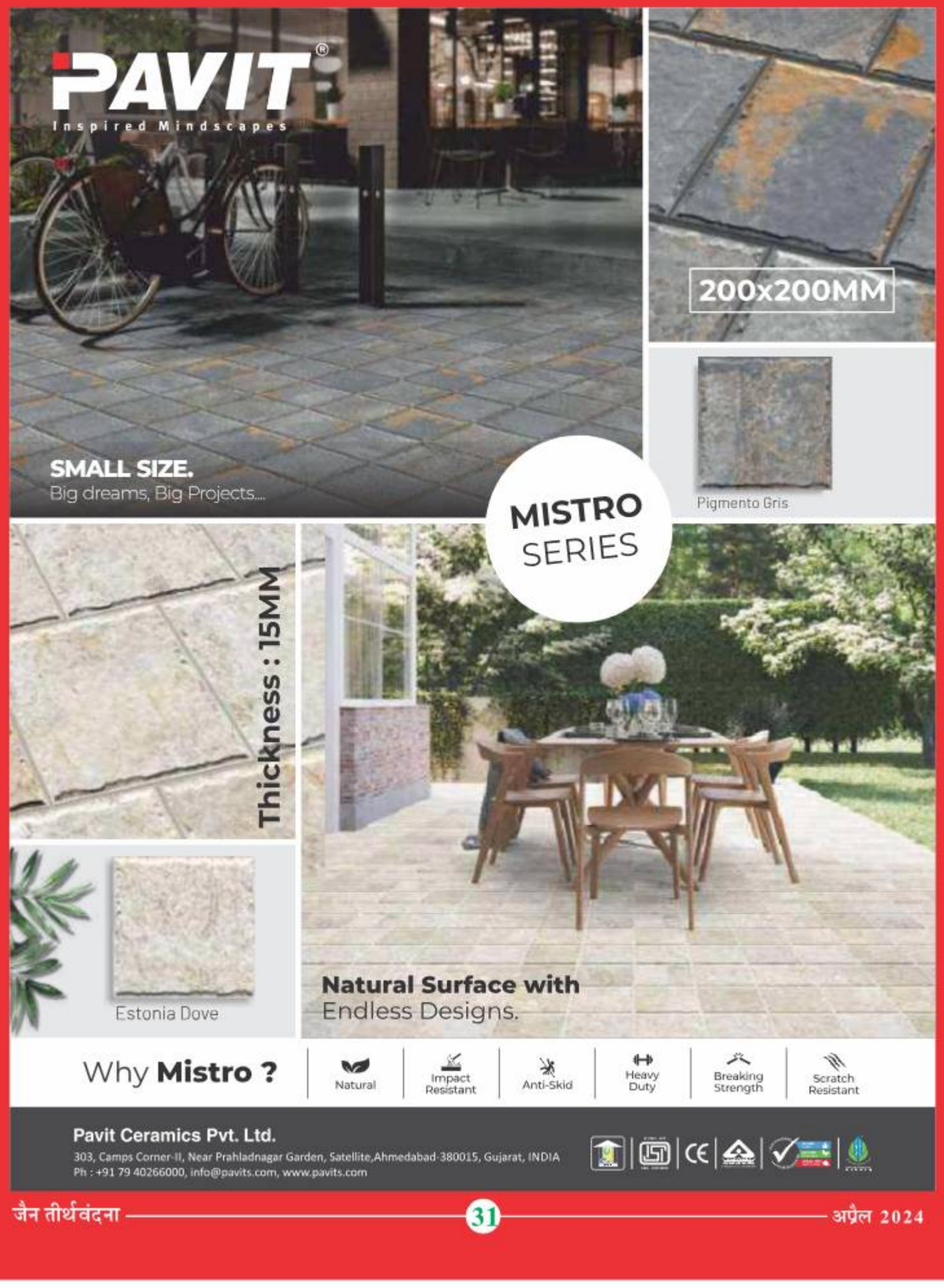
PAVIT®
Inspired Mindscapes
SMALL SIZE.
Big dreams, Big Projects....
200x200MM
Pigmento Gris
MISTRO
SERIES
Thickness : 15MM
Estonia Dove
Natural Surface with
Endless Designs.
Why Mistro ?
Natural
Impact Resistant
Anti-Skid
Heavy Duty
Breaking Strength
Scratch Resistant
Pavit Ceramics Pvt. Ltd.
303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite,Ahmedabad-380015, Gujarat, INDIA
Ph : +91 79 40266000, info@pavits.com, www.pavits.com

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2022-24
Jain Tirth vandana, English-Hindi April 2024
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2022-24
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

 Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004